क्राइम लॉर्ड का ट्रायल: बॉम्बे से बैंकॉक तक

अंबर शर्मा

अपराध सरगना का रास्ता

बॉम्बे बैंकॉक

अंबर शर्मा

अपराध सरगना का सफर: बॉम्बे से

बैंकॉक

अंबर शर्मा
मोगली प्रोडक्शंस द्वारा प्रकाशित। प्रथम प्रकाशन तिथि: 2023। कॉपीराइट © अंबर शर्मा। ईमेल आईडी: themowgliproductions@gmail.com
वितरक - एम्प्टी कैनवस पब्लिशर्स, 4435-36/7, पहली मंजिल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, फोन - 011-41627043, मोबाइल - +91-9958232447, ईमेल - emptycanvaspublishers@gmail.com
ISBN संख्या - 978-81-965910-6-9
मुद्रित और जिल्दबंद: मणिपाल टेक्नोलॉजीज लिमिटेड, मणिपाल
टाइपसेटिंग: निर्मल, चंडीगढ़
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा, प्रसारित नहीं किया जाएगा, और प्रकाशकों की लिखित अनुमति के बिना इसका किसी भी रूप में, पूर्ण या आंशिक रूप से, पुनरुत्पादन नहीं किया जा सकता है (आलोचनात्मक लेखों या समीक्षाओं में संक्षिप्त उद्धरणों को छोड़कर)।
इस पुस्तक में व्यक्त विचार और मत लेखक के अपने हैं और तथ्य उन्हीं के द्वारा बताए गए हैं। प्रकाशक इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं।
ii मैं उन सभी स्रोतों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बिना मेरी कोई भी खोजी कहानी पूर्ण नहीं हो सकती थी।
तृतीय

प्रस्तावना
प्रिय पाठकों,
सबसे पहले, मैं आप सभी का मेरी पिछली पुस्तक, "ऑपरेशन चाचाजन" पर बरसाए गए अपार प्रेम के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। यह पुस्तक न केवल अमेज़न किंडल पर ट्रेंडिंग पुस्तकों की सूची में शामिल हुई, बल्कि लगातार शीर्ष

10 में बनी रही। "ऑपरेशन चाचाजन" में हाफ़िज़ सईद पर हुए हमले की कहानी वर्णित है, और इस पुस्तक में मैंने हाफ़िज़ सईद की हत्या की साजिश के विस्तृत विवरण का वर्णन किया है। हाफ़िज़ सईद एक आतंकवादी है जो भारत में सुनियोजित तरीके से आतंकी हमलों को अंजाम देता रहा है। वह ओसामा बिन लादेन जितना ही कुख्यात है।
जैसा कि आप में से कई लोग जानते हैं, मैंने 2003 में वन्यजीव फोटोग्राफी से अपने करियर की शुरुआत की और साथ ही खोजी फिल्म निर्माण में भी हाथ आजमाया। मैंने कई वर्षों तक मुंबई माफिया पर शोध किया और उस शोध को वृत्तचित्रों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। जब भी मुंबई माफिया की चर्चा होती है, हम अक्सर दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन का नाम सुनते हैं, लेकिन मुंबई माफिया में कई अन्य लोग भी थे जिनके नाम तो हमें पता थे, लेकिन उनके बारे में हमारे पास कोई विस्तृत जानकारी नहीं थी। वे अपराध की दुनिया में प्रसिद्ध थे, लेकिन उनके जीवन के अन्य पहलू अज्ञात रहे। इसलिए, मैं ऐसे व्यक्तियों की सच्ची कहानियाँ आप तक पहुँचाना चाहता था, आपको बताना चाहता था कि वे वास्तव में कौन थे, वे कहाँ से आए थे और उन्होंने अपराध की दुनिया में अपना नाम कैसे बनाया। यह श्रृंखला मेरी पहली पुस्तक से शुरू होती है, और जिस कहानी को मैं बताने जा रहा हूँ वह है "रोहित वर्मा" की। रोहित वर्मा छोटा राजन के विशेष लेफ्टिनेंट थे, और वर्ष 2000 में, जब छोटा राजन पर जानलेवा हमला हुआ, तो उन्होंने छोटा राजन को बचाने के लिए अपने शरीर पर 32 गोलियाँ खाईं। इस घटना के बाद रोहित वर्मा का नाम हर अखबार और समाचार चैनल की सुर्खियों में छा गया, लेकिन उनके जीवन की सच्ची कहानी कभी सामने नहीं आई।
इस पुस्तक में मैंने रोहित वर्मा के अपराध की दुनिया में कदम रखने के पूरे सफर का विस्तृत वर्णन किया है। पहले की तरह, मैंने इस पुस्तक को भी सरल भाषा में लिखा है। मैंने सभी घटनाओं को कालानुक्रमिक रूप से प्रस्तुत किया है, किसी भी घटना को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया है। मैं सिर्फ एक लेखक नहीं, बल्कि एक खोजी फिल्म निर्माता हूं, इसलिए मेरा मानना है कि कहानी को सीधे और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना हमेशा बेहतर होता है। रोहित वर्मा की कहानी ने मुझे आकर्षित किया क्योंकि इसमें पारिवारिक दुविधाएं, प्रेम प्रसंग, मित्रता और दोस्ती में विश्वासघात शामिल हैं।

मुंबई माफिया के अलावा, मैं आपके सामने और भी सच्ची कहानियाँ लाने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे अपनी अगली किताब के बारे में बताते हुए खुशी हो रही है, जिसे मैंने लिखना शुरू कर दिया है। यह किताब एफबीआई के लिए काम करने वाले एक जासूस, कामरान फरीदी पर आधारित है। मुझे उम्मीद है कि एफबीआई के इस जासूस पर लिखी मेरी किताब जनवरी या फरवरी 2024 तक उपलब्ध हो जाएगी। इसके साथ ही, मैं मुंबई, दक्षिण भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के माफिया संगठनों से जुड़ी कहानियाँ भी लाता रहूँगा। मैं आपको एक किताब भी उपलब्ध कराने का प्रयास करूँगा।
छोटा राजन से जुड़े जाली नोटों और नशीले पदार्थों के व्यापार पर जल्द से जल्द कार्रवाई की जानी चाहिए।
मुझे उम्मीद है कि आपको मुंबई माफिया से जुड़ी रोहित वर्मा की कहानी पसंद आएगी। आपकी निष्पक्ष राय का बेसब्री से इंतजार है।
31 अगस्त 2023 अंबर शर्मा (मोगली बाबा)
15 सितंबर 2000 को।
बैंकॉक में, सावन कोर्ट के बाहर, मीडिया में ज़बरदस्त हलचल मची हुई थी। रिपोर्टर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे, और सबसे पहले यह खबर हमारे न्यूज़ चैनल पर दिखाई दी। एक जानलेवा हमला हुआ था, और पीड़ित छोटा राजन था। इस घातक हमले में रोहित वर्मा को विशेष रूप से निशाना बनाया गया था। रोहित वर्मा की पत्नी भी गोलीबारी में घायल हो गईं, और यहां तक कि उनकी नेपाली नौकरानी भी इस मुठभेड़ में घायल हो गई। यहां आप बैंकॉक पुलिस को छोटा राजन को अस्पताल ले जाते हुए देख सकते हैं। छोटा राजन की पीड़ा की पहली झलक हमारे न्यूज़ चैनल पर दिखाई दी, जो सबसे तेज़ और सबसे पहले खबर देने वाला चैनल था।
छोटा राजन पर हुए हमले से जुड़ी सभी ताज़ा जानकारियाँ आपको सिर्फ़ हमारे न्यूज़ चैनल पर मिलेंगी। एक न्यूज़ रिपोर्टर ने चिल्लाकर कहा, “बैंकॉक में हमारे एक मुखबिर ने हमें बताया है कि रवि पुजारी और गुरु सतम भी छोटा राजन और रोहित वर्मा के साथ थे, लेकिन फिलहाल उनका पता नहीं चल पाया है। गोलीबारी के डर से रवि पुजारी और गुरु सतम बैंकॉक से भाग गए हैं।”
एक और नाम जो सामने आया है, वह है अशोक शेट्टी का। अशोक शेट्टी, जिसे छोटा राजन के साथ ऑस्ट्रेलिया और मलेशिया में देखा गया था, फिलहाल लापता है।
छोटा राजन पर यह हमला दाऊद इब्राहिम के खास आदमी, छोटा शकील ने करवाया था।

हमले के दौरान, छोटा राजन ने अपनी जान बचाने के लिए अपने फ्लैट की खिड़की से छलांग लगा दी। जैसे ही उसने यह साहसी छलांग लगाई, छोटा शकील के हमलावरों ने उस पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी, जिसमें उसे पांच गोलियां लगीं। फ्लैट की खिड़की से कूदने के कारण छोटा राजन के हाथ और पैर में फ्रैक्चर हो गए।
बैंकॉक पुलिस ने खुलासा किया कि छोटा राजन विजय कदम के छद्म नाम से बैंकॉक में दाखिल हुआ था और विजय कदम नाम के भारतीय पासपोर्ट का इस्तेमाल कर रहा था। वहीं दूसरी ओर, रोहित वर्मा माइकल डिसूजा नाम से बैंकॉक में रह रहा था। छोटा राजन बैंकॉक में रोहित वर्मा का मेहमान था। सावन कोर्ट बिल्डिंग में रहने वालों ने कभी सोचा भी नहीं था कि मुंबई का अंडरवर्ल्ड डॉन उनके ठीक बगल वाले फ्लैट नंबर C3 में रह रहा होगा।
भारत के सभी समाचार चैनल दिन-रात टीवी पर यह खबर प्रसारित कर रहे थे और अपने कैमरों में छोटा राजन की एक झलक कैद करने की हर संभव कोशिश कर रहे थे। सभी समाचार चैनलों ने समितिवेज अस्पताल के बाहर भीड़ लगा रखी थी और हर कोई अस्पताल के अंदर छोटा राजन का साक्षात्कार लेने या इलाज के दौरान उनकी एक झलक कैमरे में कैद करने का प्रयास कर रहा था। हालांकि, बैंकॉक पुलिस किसी को भी छोटा राजन के पास नहीं जाने दे रही थी और उनकी सुरक्षा के लिए सुरक्षा का अतिरिक्त इंतजाम कर दिया गया था।
26 जनवरी 1971 को, जब भारत अपना इक्कीसवाँ गणतंत्र दिवस मना रहा था, मुंबई के नानावती अस्पताल में रामकृपाल पांडे परिवार एक नन्हे मेहमान का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। पांडे परिवार मुंबई के सांताक्रूज़ इलाके में रहने वाला एक साधारण मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार था। रामकृपाल पांडे इंडियन टेक्सटाइल मिल में काम करते थे और अपने परिवार के साथ सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। 26 जनवरी 1971 के उस खास दिन, पांडे परिवार की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था, क्योंकि उनके परिवार में एक नया सदस्य आने वाला था। पांडे परिवार ने इस नवजात शिशु का नाम धर्मेंद्र पांडे रखा।
कई आम भारतीय परिवारों की तरह, पांडे परिवार भी हिंदी सिनेमा से प्रभावित था, और रामकृपाल पांडे ने अपने बेटे का नाम धर्मेंद्र रखा, इस उम्मीद में कि उनका बेटा बॉलीवुड के सुपरस्टार धर्मेंद्र देओल की तरह नाम कमाएगा।
किसी भी मध्यमवर्गीय परिवार की तरह, पांडे परिवार की भी यही इच्छा थी कि उनका बच्चा दुनिया में नाम कमाए। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था।

धर्मेंद्र पांडे ने नाम तो कमाया, लेकिन अपराध की दुनिया में। यह धर्मेंद्र पांडे मुंबई के अंडरवर्ल्ड में रोहित वर्मा के नाम से मशहूर हुआ।
धर्मेंद्र पांडे, जिन्हें परिवार में प्यार से बाबू कहा जाता था, एक स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण में पले-बढ़े। वे सबकी आँखों के तारे थे। रामकृपाल पांडे ने यह सुनिश्चित किया कि धर्मेंद्र को अच्छी शिक्षा मिले, और परिवार में सभी उन्हें "बाबू" कहकर पुकारने लगे। बाबू परिवार और रिश्तेदारों के लाडले बन गए।
अपने बेटे को सर्वोत्तम शिक्षा दिलाने के सपने के साथ, रामकृपाल पांडे ने धर्मेंद्र पांडे का दाखिला सांताक्रूज़ के प्रसिद्ध रेव. सी.एफ. एंड्रयूज हाई स्कूल में कराया। बाबू, जिन्हें धर्मेंद्र पांडे के नाम से भी जाना जाता था, ने रेव. सी.एफ. एंड्रयूज हाई स्कूल से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की।
अपने स्कूली दिनों में बाबू ने एक अनुशासित और मेहनती छात्र के रूप में अपनी पहचान बनाई और एक विद्वान के रूप में अपना नाम रोशन किया। उन्होंने पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और परीक्षाओं में लगातार उच्च अंक प्राप्त किए। धर्मेंद्र पांडे ने वाणिज्य विषय चुना और लेखांकन एवं वित्त में उनकी मजबूत नींव ने उन्हें काफी लाभ पहुंचाया। इस स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण और शिक्षा के प्रति समर्पण के बल पर, धर्मेंद्र पांडे, जिन्हें बाबू के नाम से भी जाना जाता था, एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर थे।
रामकृपाल पांडे की आकांक्षाओं को उस समय गहरा आघात पहुँचा जब उनके प्रिय बाबू ने नौकरी करने पर अड़ियल रवैया अपनाया। पूरा परिवार चाहता था कि बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद बाबू उच्च शिक्षा के लिए महाविद्यालय में दाखिला लें और फिर एक अच्छी नौकरी की तलाश करें। परिवार के सभी सदस्यों के बार-बार समझाने के बावजूद, धर्मेंद्र अपने कुछ खर्चों को पूरा करने के लिए कम से कम काम शुरू करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे।
बारहवीं कक्षा वाणिज्य संकाय से उत्तीर्ण करने के बाद धर्मेंद्र पांडे, जिन्हें बाबू के नाम से भी जाना जाता था, ने काम शुरू करने का निश्चय किया। उन्होंने बारहवीं कक्षा पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश शुरू की, लेकिन बारहवीं उत्तीर्ण होने के बाद रोजगार पाना आसान नहीं था। तमाम कोशिशों के

बावजूद बाबू को किसी प्रतिष्ठित कंपनी में नौकरी नहीं मिली। नौकरी की तलाश से निराश होकर उन्होंने स्थानीय स्तर पर काम ढूंढना शुरू कर दिया। अंततः उनकी मेहनत रंग लाई। धर्मेंद्र पांडे को सायन क्षेत्र में एक बेकरी में नौकरी मिल गई। यह बेकरी अपने केक के लिए काफी मशहूर थी और सायन सर्कल में स्थित "मोंगिनिस केक शॉप" के नाम से जानी जाती थी। मोंगिनिस केक शॉप में बाबू की मुख्य जिम्मेदारी लेखा-जोखा संभालना थी, यह कौशल उन्होंने वाणिज्य की पढ़ाई के दौरान सीखा था। वाणिज्य की पृष्ठभूमि के कारण, धर्मेंद्र पांडे ने मोंगिनिस केक शॉप में सहायक प्रबंधक के रूप में काम शुरू किया।
सांताक्रूज़ से सायन तक की सड़क लगभग 10 किलोमीटर लंबी है, और धर्मेंद्र पांडे वहां जाने के लिए तीन पहिया ऑटो-रिक्शा का इस्तेमाल करते थे। सायन में केक की दुकान पर उनकी नौकरी के लिए उन्हें आधी रात तक काम करना पड़ता था, इसलिए वे आधी रात को घर लौटने के लिए तीन पहिया ऑटो-रिक्शा पर निर्भर रहते थे। उस समय मुंबई में देर रात के समय तीन पहिया ऑटो-रिक्शा मिलना मुश्किल था, लेकिन रोज़ाना आने-जाने के कारण धर्मेंद्र को हमेशा एक ऑटो- रिक्शा की ज़रूरत पड़ती थी।
संयोगवश हुई मुलाकातों के चलते धर्मेंद्र पांडे की दोस्ती उस ऑटो-रिक्शा चालक से हो गई जो उन्हें सायन से सांताक्रूज़ तक नियमित रूप से उनके घर छोड़ता था। चालक का नाम राम्या था और वह मलाड में रहता था। देखने में तो राम्या एक साधारण चालक लगता था, लेकिन उसके आपराधिक गिरोहों से संबंध थे और वह अक्सर इन लोगों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाता था।
यह केक की दुकान इतनी मशहूर थी कि हर वर्ग के लोग यहाँ केक खाने और खरीदने आते थे। इनमें पेशेवर लोग, व्यापारी, जेल से छूटे हुए कैदी, छोटे-मोटे चोर और बड़े आपराधिक गिरोहों से जुड़े लोग भी शामिल थे। धर्मेंद्र पांडे, जिन्हें बाबू के नाम से जाना जाता था, इस केक की दुकान में सहायक प्रबंधक के रूप में काम करते थे। धर्मेंद्र, या बाबू, काफी मिलनसार थे और दुकान के ज़्यादातर नियमित ग्राहकों के साथ उनके अच्छे संबंध थे। उनके दोस्ताना व्यवहार ने कुछ ग्राहकों को उनका करीबी दोस्त भी बना दिया था, जिनमें जगदीश शेट्टी भी शामिल थे, जिन्हें जगगु शेट्टी के गिरोह के सदस्य राजेश शेट्टी के नाम से भी जाना जाता था।

[illegible]

[illegible]

मिलने पर उसे छोड़ दिया। यह घटना किसी हिंदी फिल्म के दृश्य की याद दिलाती है, जिसमें एक व्यक्ति गश्त के दौरान अलार्म बजाते हुए पुलिस के सामने आ जाता है, लेकिन पुलिस को कुछ भी संदिग्ध नहीं मिलता, जिसके बाद उसका नाम पूछकर उसे छोड़ दिया जाता है।
पुलिस से बच निकलने और गिरोह के सदस्यों को बचाने के बाद, धर्मेंद्र पांडे, जिसे बाबू के नाम से भी जाना जाता था, जगगु शेट्टी के गिरोह का एक प्रमुख सदस्य बन गया। उस दिन से गिरोह उसे रोहित वर्मा कहने लगा। बाबू, जो अब रोहित वर्मा था, जगगु शेट्टी के गिरोह के साथ विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हुआ और कई डकैतियों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। (जब मैं रोहित के बारे में जानकारी जुटा रहा था, तो कुछ लोगों ने बताया कि बाबू ने राम्या से पहली बार मिलने पर भी अपना असली नाम नहीं बताया था। इसके बजाय, उसने अपना परिचय रोहित वर्मा के रूप में दिया था। इसका कारण अज्ञात है। हालांकि, यह सच है कि राम्या से दोस्ती करने के कुछ ही समय बाद बाबू ने अपराध की दुनिया में कदम रख दिया था।)
धर्मेंद्र पांडे, जिसे बाबू और रोहित वर्मा के नाम से भी जाना जाता था, जगगु शेट्टी के गिरोह के साथ काम करते हुए कई आपराधिक गतिविधियों में शामिल था, लेकिन वह पकड़े जाने से बचता रहा था। हालांकि, एक महत्वपूर्ण घटना ने स्थिति बदल दी। जगगु शेट्टी के गिरोह ने मलाड और कांदिवली के बीच स्थित एक हीरा कारखाने में बड़ी डकैती को अंजाम दिया। इस डकैती में उन्होंने कई लाख रुपये के हीरे लूट लिए। पुलिस ने इस डकैती के लिए अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की, लेकिन उनकी जांच से कोई ठोस सुराग नहीं मिला। इस हीरा डकैती के बाद, जगगु शेट्टी का गिरोह कुछ समय के लिए शांत हो गया और उसने कोई और अपराध नहीं किया, और रोहित वर्मा (बाबू) ने एक केक की दुकान पर सामान्य नौकरी करना शुरू कर दिया। दूसरी ओर, पुलिस पर हीरा डकैती में शामिल व्यक्तियों को हर हाल में पकड़ने का दबाव बढ़ता जा रहा था। कई महीने बीत गए, और फिर एक बड़ी सफलता मिली।
पुलिस को एक मुखबिर से सूचना मिली कि महेंद्र मिश्रा, जो जगगु शेट्टी के गिरोह का सदस्य था और हीरे की चोरी में भी शामिल था, इस मामले में शामिल था। महेंद्र मिश्रा को गिरफ्तार कर लिया गया और उसने पुलिस को चोरी में शामिल लोगों के नाम बताए। 26 सितंबर, 1994 को पुलिस ने राजेश शेट्टी को गिरफ्तार किया, जिससे रोहित वर्मा (बाबू), राम्या और हीरे की चोरी में

शामिल अन्य व्यक्तियों की पहचान हुई। राजेश शेट्टी की गिरफ्तारी के बाद, पुलिस ने ऑटो चालक राम्या को भी पकड़ लिया। गिरफ्तारी के बाद, राम्या पुलिस को सांताक्रूज़ स्थित रोहित वर्मा के घर ले गई। घटनाक्रम के इस क्रम ने अंततः पुलिस को हीरे की चोरी से जुड़े व्यक्तियों की पहचान और जगगु शेट्टी के गिरोह से उनके संबंध का पता लगाने में मदद की।
रामकृपाल पांडे के जीवनकाल में पहली बार पुलिस उनके घर में दाखिल हुई और पुलिस के आते ही उनका पूरा परिवार सदमे में था। परिवार सदमे में इसलिए था क्योंकि पुलिस रोहित वर्मा के बारे में पूछताछ कर रही थी, जबकि रामकृपाल पांडे के घर में रोहित वर्मा नाम का कोई सदस्य नहीं रहता था। पुलिस ने काफी दबाव डाला, लेकिन परिवार का हर सदस्य यही कहता रहा कि उनके घर में रोहित वर्मा नाम का कोई व्यक्ति नहीं रहता। पुलिस और परिवार के बीच चल रही खींचतान के बीच बाजार गए बाबू घर लौट आए और पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर उनके घर से ले गई। बाबू की गिरफ्तारी के बाद परिवार को धर्मेंद्र पांडे उर्फ बाबू उर्फ रोहित वर्मा के आपराधिक कारनामों के बारे में पता चला और बाबू के आपराधिक इतिहास को सुनकर रामकृपाल पांडे दंग रह गए।
26 सितंबर 1994 को धर्मेंद्र पांडे का नाम पुलिस के आपराधिक रिकॉर्ड में आधिकारिक तौर पर रोहित वर्मा के रूप में दर्ज किया गया, और मुंबई के अपराध जगत में अब बाबू ही रोहित वर्मा बन गए थे। पुलिस ने रोहित वर्मा और जग्गू गिरोह के सदस्यों को अदालत में पेश किया, और अदालत ने रोहित वर्मा और जग्गू शेट्टी गिरोह को जेल भेज दिया।
1994 में, मुंबई में दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन नामक दो गिरोहों के बीच गैंगवार चल रही थी। 1993 के बम धमाकों के बाद, अंडरवर्ल्ड दो गुटों में बंट गया था: एक खुद को देशभक्त बताता था और दूसरा राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लिप्त था। छोटा राजन खुद को एक देशभक्त हिंदू डॉन के रूप में पेश करने की पुरजोर कोशिश कर रहा था। अपने साक्षात्कारों और सार्वजनिक बयानों में, छोटा राजन अक्सर कहता था कि वह मुंबई बम धमाकों की साजिश रचने के लिए दाऊद इब्राहिम से बदला लेगा।
हालांकि, कहानी की सच्चाई बिल्कुल अलग थी। दाऊद से अलग होने की छोटी राजन की तैयारी 1991 में शुरू हुई। 1991 में, मुंबई में एक प्लॉट को लेकर छोटी राजन का शरद शेट्टी से विवाद हुआ। दूसरी ओर, अमर जुकाकर, दिवाकर चूरी और संजय रागड़ समेत छोटी राजन के खास गुर्गे जब भी दुबई जाते थे, शरद शेट्टी

याट पर छोटा राजन की हत्या की योजना के पीछे दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन के बीच डी कंपनी से अलग होने से पहले हुई एक बैठक का मुद्दा था। इस बैठक में यह बात सामने आई कि छोटा राजन डी कंपनी के भीतर एक अलग गिरोह बना रहा था। किसी भी माफिया गिरोह में, यदि कोई सदस्य संगठन के भीतर एक और गिरोह बनाने का प्रयास करता है, तो इसे बर्दाश्त नहीं किया जाता। छोटा शकील भी इस बैठक में मौजूद था, और छोटा राजन और छोटा शकील के बीच तीखी बहस हुई। छोटा राजन का तर्क था कि डी कंपनी में, विशेष रूप से कंपनी की स्थापना में, उसके योगदान ने उसे संगठन में दाऊद इब्राहिम के बराबर अधिकार दिया था। इसी असहमति के कारण अंततः याट पर छोटा राजन की हत्या की योजना बनाई गई। और इसी बैठक के दौरान, दाऊद इब्राहिम ने छोटा राजन का पासपोर्ट जब्त कर लिया। इसी दौरान 1993 में मुंबई बम धमाके हुए और टाइगर मेमन और दाऊद इब्राहिम को मुख्य आरोपी के रूप में पहचाना गया। छोटा राजन ने मीडिया इंटरव्यू में दावा किया कि 1993 के धमाकों के बाद उनका दाऊद से संबंध टूट गया था, लेकिन सच्चाई कुछ और ही थी। मुंबई धमाके मार्च 1993 में हुए थे, जबकि छोटा राजन दिसंबर 1993 में दाऊद इब्राहिम की जन्मदिन पार्टी में मौजूद थे, जहां उन्होंने डांस भी किया था। यह पार्टी दाऊद इब्राहिम के दुबई स्थित व्हाइट हाउस आवास पर आयोजित की गई थी।
1994 में, छोटा राजन दाऊद से अलग हो गया और उसने माफिया जगत में "मुंडी कट पासपोर्ट" के नाम से मशहूर एक जाली पासपोर्ट बनवा लिया। सुनील सोनस उर्फ सुनील फ्लोरिस्ट ने उसके लिए यह जाली पासपोर्ट बनवाया था। इस जाली पासपोर्ट की मदद से छोटा राजन दुबई से ईरान और फिर मलेशिया गया। मलेशिया में छोटा राजन इकबाल चम्मी के घर पर मेहमान बनकर रुका और वहीं से उसने दाऊद इब्राहिम को फोन करके बताया कि अब उसका डी कंपनी से कोई संबंध नहीं है। इसलिए दाऊद को अपना हिस्सा देना होगा। दाऊद इब्राहिम की डी कंपनी से अलग होने के बाद, छोटा राजन को दस लाख दिरहम के रूप में अपना हिस्सा मिला। अगर छोटा राजन 1993 के बम धमाकों के कारण अलग हुआ होता, तो वह मार्च 1993 के धमाकों के ठीक छह महीने बाद दिसंबर में दाऊद इब्राहिम की जन्मदिन पार्टी में शामिल नहीं होता और न ही दस लाख दिरहम स्वीकार करता। असल में, छोटा राजन को खुद को अलग करने का मौका चाहिए था, जो उसे 1993 के बम धमाकों के रूप में मिला। 1993 के धमाकों के बाद, छोटा राजन ने खुद को एक हिंदू डॉन और देशभक्त के रूप में पेश करना शुरू कर दिया। 1994 में गैंगवार शुरू हो गए।

[illegible] [illegible] de 1993 de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de, de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] 1994 [illegible], [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible]

[illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de, [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इसके अलावा, देशभक्ति की गतिविधियों में शामिल होने से उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। रोहित वर्मा मत्या भाई की बात समझ गया और छोटा राजन के गिरोह के लिए काम करने को तैयार हो गया।
मत्या भाई ने रोहित वर्मा के बारे में सारी जानकारी छोटा राजन को जेल में रहते हुए ही दे दी थी। उस समय मोबाइल फोन उपलब्ध नहीं थे, इसलिए माफिया गिरोह संदेशों को पहुंचाने के लिए एक अलग टीम रखता था। इस टीम का काम यह सुनिश्चित करना था कि जेल में बंद गिरोह के सदस्यों के संदेश सरगना तक पहुंचें और सरगना के संदेश जेल में बंद गिरोह के सदस्यों तक पहुंचें। छोटा राजन के लिए भी ऐसी ही एक टीम थी, जो यह सुनिश्चित करती थी कि छोटा राजन के संदेश मत्या भाई तक जेल में पहुंचें और मत्या भाई के संदेश छोटा राजन तक पहुंचें।
जगगु शेट्टी के गिरोह के कुछ सदस्य अभी भी बाहर थे, जिनमें अजय गोस्वामी नाम का एक व्यक्ति भी शामिल था, जिसने एक वकील नियुक्त किया था और जगगु शेट्टी के गिरोह के सदस्यों की रिहाई के लिए कानूनी कार्यवाही की देखरेख कर रहा था। रोहित वर्मा और जगगु शेट्टी के गिरोह के अन्य सदस्यों पर लगभग 12-14 मामले दर्ज थे, और इन मामलों के कारण जमानत मिलने में भी समय लग रहा था। रोहित वर्मा को सितंबर में गिरफ्तार किया गया था, और तीन महीने की कड़ी कानूनी कार्यवाही के बाद, उन्हें 24 दिसंबर, 1994 को जमानत मिली। हालांकि, 24 दिसंबर को रिहाई ज्ञापन जारी नहीं किया जा सका, क्योंकि अदालत 25 दिसंबर से शुरू होने वाली शीतकालीन अवकाश के लिए बंद थी। जमानत मिलने के बावजूद, रोहित वर्मा को जेल में ही रहना पड़ा, और उन्होंने नव वर्ष मत्या भाई और जगगु शेट्टी के गिरोह के अन्य सदस्यों के साथ मनाया। शीतकालीन अवकाश के बाद, अदालत फिर से खुली, और रिहाई आदेश जारी किया गया। रिहाई का आदेश जेल पहुँच गया और 6 जनवरी 1995 को रोहित वर्मा जेल से रिहा हो गए। रोहित वर्मा की रिहाई से पहले ही मत्या भाई ने उन्हें छोटा राजन का नंबर दे दिया था। जेल से बाहर आने के बाद रोहित वर्मा सांताक्रूज़ स्थित अपने घर गए, जहाँ उनके पिता रामकृपाल पांडे ने उन्हें खूब खरी-खोटी सुनाई। रोहित के जेल में रहने के दौरान उनके परिवार का कोई भी सदस्य उनसे मिलने नहीं आया था। जब रोहित घर लौटे, तो रामकृपाल पांडे ने बाबू को पनाह नहीं दी और रोहित वर्मा को घर छोड़ने के लिए कहा।

जब रोहित वर्मा को उसके पिता रामकृपाल पांडे ने घर से निकाल दिया, तो वह मुंबई और उसके आसपास के इलाकों में रहा और मटिया भाई और छोटा राजन के संपर्क में रहा। रोहित वर्मा अक्सर जेल में मटिया भाई से मिलने जाता था और फोन पर छोटा राजन से बात करता रहता था। वहीं, धर्मेंद्र पांडे, जिसे बाबू के नाम से भी जाना जाता था, ने अपने पिता और परिवार से सारे संबंध तोड़ लिए थे। घर से निकाले जाने के बाद, बाबू ने रोहित वर्मा के नाम से छोटा राजन के लिए काम करना शुरू कर दिया।
छोटा राजन के गिरोह में शामिल होने के बाद, रोहित वर्मा ने जबरन वसूली की गतिविधियों की देखरेख शुरू कर दी और उससे होने वाली कमाई में से पैसे इकट्ठा करने लगा। छोटा राजन के गिरोह से जुड़ने के बाद, रोहित ने अपने कुछ पुराने साथियों को अपने साथ काम करने के लिए भर्ती किया और कुछ नए लोगों को भी शामिल किया। रोहित वर्मा के गिरोह में शामिल होने के दौरान ही रवि पुजारी भी छोटा राजन के गिरोह में शामिल हुआ था, और रोहित के साथ काम करने वाले साथियों में रवि पुजारी, बब्ब्या, अरुण महाजन, बंटी पांडे और बालू डोकरे शामिल थे। छोटा राजन के गिरोह में रोहित वर्मा का प्रभाव बढ़ता गया और मुंबई में उसकी अच्छी-खासी पकड़ हो गई। इसी वजह से रोहित पुलिस और प्रतिद्वंद्वी गिरोहों की नजर में आ गया। नतीजतन, छोटा राजन ने रोहित को मुंबई से बाहर काम करने की सलाह दी।
सन् 1995 के दौरान, रोहित वर्मा मुंबई और उसके आसपास के इलाकों में गिरोह की गतिविधियों को संचालित करता रहा। रवि पुजारी और अरुण महाजन नाम के दो व्यक्ति रोहित की गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। रवि पुजारी रोहित वर्मा के नाम का इस्तेमाल करके उसकी ओर से फिरौती के लिए फोन करता था। रोहित खुद बहुत कम फोन करता था; इसके बजाय, वह रवि पुजारी को रोहित बनकर फोन करने और फिरौती व समझौते करने का निर्देश देता था।
जब रोहित वर्मा मुंबई में अपना गिरोह चला रहा था, उसी दौरान छोटा राजन ने ऑस्ट्रेलिया और मलेशिया में अपना अड्डा बना लिया था। छोटा राजन के गिरोह में भरत नेपाली और संतोष शेट्टी जैसे अन्य लोग भी शामिल थे। संतोष शेट्टी की पहली मुलाकात छोटा राजन से संयुक्त अरब अमीरात में हुई थी। छोटा राजन और संतोष शेट्टी एक ही दफ्तर में काम करते थे, और ऊपरी तौर पर संतोष शेट्टी का दफ्तर चावल के आयात-निर्यात के कारोबार में शामिल लगता था। असल में, संतोष शेट्टी का दफ्तर नशीले पदार्थों की तस्करी का अड्डा था, और सीमा

शुल्क विभाग में संतोष शेट्टी के मजबूत संबंध थे। इन्हीं संबंधों के चलते छोटा राजन ने संतोष के साथ हाथ मिलाया।
हालांकि, संतोष शेट्टी छोटा राजन के साथ जुड़े रहने से संतुष्ट नहीं था और उसने अलग से एक बड़े अंतरराष्ट्रीय गिरोह की योजना बनाना शुरू कर दिया। संतोष के सहयोगी भरत नेपाली ने छोटा राजन के गिरोह को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
मुंबई में, छोटा राजन के गिरोह की गतिविधियों की निगरानी रोहित वर्मा की कड़ी निगरानी में हो रही थी, जबकि संतोष शेट्टी और भरत नेपाली अंतरराष्ट्रीय मामलों की देखरेख कर रहे थे। 1995 के अंत तक, छोटा राजन ऑस्ट्रेलिया चला गया और वहीं रहने लगा। ऑस्ट्रेलिया में रहने के दौरान, छोटा राजन का संपर्क अशोक शेट्टी से हुआ। अंडरवर्ल्ड के सूत्रों के अनुसार, अशोक शेट्टी ऑस्ट्रेलिया में ड्राइवर का काम करता था और छोटा राजन अक्सर उसकी टैक्सी का इस्तेमाल करता था। समय के साथ, छोटा राजन और अशोक शेट्टी के बीच दोस्ती हो गई। दोस्ती होने के बाद, छोटा राजन ने अशोक शेट्टी को अपने गिरोह में शामिल कर लिया।
जब भी छोटा राजन यात्रा करते थे, अशोक शेट्टी उनके साथ जाते थे। अशोक शेट्टी ने छोटा राजन के साथ मलेशिया, सिंगापुर, हांगकांग और अन्य कई स्थानों की यात्रा की।
रोहित के छोटा राजन के गिरोह में शामिल होने के बाद, मुंबई में गिरोह का दबदबा और गतिविधियां मजबूत होने लगीं। जबरन वसूली के साथ-साथ, वे मुंबई भर में बिल्डरों के लिए सुपारी लेकर हत्याएं करने और भूमि विवाद सुलझाने में भी लगे हुए थे। 13 नवंबर, 1995 को, रोहित वर्मा ने छोटा राजन के आदेश पर, मुंबई में ईस्ट वेस्ट एयरलाइंस के मालिक थकियुद्दीन अब्दुल वाहिद की दिनदहाड़े उनके कार्यालय के बाहर हत्या कर दी। इस हत्या के बाद, रोहित वर्मा तुरंत मुंबई छोड़कर नेपाल की राजधानी काठमांडू चला गया।
काठमांडू में रोहित वर्मा ने अपना अड्डा स्थापित किया और छोटा राजन के गिरोह के साथ-साथ अपने निजी हितों के लिए भी काम करना शुरू कर दिया। उसने काठमांडू के विभिन्न इलाकों में मकान किराए पर लेकर कई गुप्त ठिकाने बनाए। रोहित वर्मा अपने अभियानों को जारी रखने के लिए इन गुप्त ठिकानों के बीच बारी-बारी से काम करता रहा।

काठमांडू में रहते हुए, रोहित वर्मा ने मुंबई में एक गिरोह चलाना शुरू कर दिया और वह काठमांडू के छोटा राजन के संपर्क में रहा। रोहित नवंबर 1995 में काठमांडू पहुंचा और जनवरी 1996 में उसने रवि पुजारी को भी काठमांडू बुलाया। रवि पुजारी अपनी पत्नी पद्मा पुजारी और बेटी डॉली के साथ काठमांडू पहुंचे। रोहित काठमांडू में रहता था और पास ही में ही उसका एक रिश्तेदार रहता था।

नेपाल में रहने वाले रोहित वर्मा के घर के पास एक एसटीडी आईएसडी पीसीओ (पब्लिक कॉल ऑफिस) था। इस पीसीओ के ज़रिए रोहित मुंबई में अपने दोस्तों और गिरोह के सदस्यों को फोन करता था और उनसे लंबी बातचीत करता था। इसी पीसीओ बूथ से फिरौती के फोन भी आने लगे थे, और ये फोन रवि पुजारी रोहित वर्मा के

नाम से करता था। शुरुआत में रवि पुजारी का मुख्य काम रोहित के साथ रहना और रोहित वर्मा के नाम से फिरौती के फोन करना था। दूसरे शब्दों में, रवि पुजारी रोहित वर्मा के सहायक के रूप में काम करता था। बहुत से लोग रोहित वर्मा की आवाज़ नहीं पहचान पाते थे, क्योंकि रवि पुजारी अक्सर रोहित वर्मा बनकर फोन करता था। काठमांडू में रहते हुए रोहित ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीता था, और फिरौती की रकम काठमांडू में ही आती थी, जिससे वह विलासितापूर्ण जीवन जी पाता था। इसके अलावा, रोहित पीसीओ के फोन का भारी-भरकम बिल भी भरता था, जो कई हज़ार रुपये तक पहुँच जाता था।
1995 में नेपाल में मोबाइल नेटवर्क नहीं था और संचार केवल लैंडलाइन फोन के माध्यम से ही संभव था। इसलिए, रोहित पीसीओ बूथ से अपने लड़कों को फोन करता था। उस समय नेपाल में पीसीओ बूथ स्थापित करना आसान काम नहीं था और इसके लिए अच्छे संपर्कों की आवश्यकता होती थी। रोहित जिस पीसीओ बूथ से फोन करता था, वह नेपाल टेलीकॉम कंपनी (एनडीसीएल) के एक उच्च पदस्थ कर्मचारी का था। उन्होंने अपने पद का बुद्धिमानी से उपयोग करते हुए एक लाभदायक पीसीओ बूथ स्थापित किया था।
दोपहर की शिफ्ट के दौरान, उनकी बहन संगीता पीसीओ बूथ के कामकाज की देखरेख करती थीं। रोहित की संगीता से मुलाकात तब होती थी जब वह मुंबई में अपने दोस्तों को फोन करने के लिए पीसीओ बूथ पर जाते थे। समय के साथ, पीसीओ बूथ पर होने वाली ये मुलाकातें काम से प्यार में बदल गईं।
रोहित वर्मा का आपराधिक इतिहास था और मुंबई में उसकी तलाश जारी थी। वह संगीता या उसके परिवार को कभी यह नहीं बता सका कि वह मुंबई के सबसे वांछित अपराधियों में से एक है और छोटा राजन के गिरोह के लिए काम करता है। पीसीओ बूथ चलाने वाली महिला का पूरा नाम संगीता शर्मा था। संगीता शर्मा नेपाल के एक ब्राह्मण परिवार से थीं, और रोहित वर्मा भी एक ब्राह्मण परिवार से थे। इसी वजह से रोहित को लगा कि वह संगीता से शादी कर सकता है।
संगीता से प्रेम हो जाने के बाद, रोहित वर्मा ने अपनी असली पहचान छिपाने और एक नया नाम अपनाने का फैसला किया। रोहित वर्मा ने संगीता से अपना परिचय संदेश शर्मा के रूप में कराया। उसने बताया कि वह भारत का एक व्यापारी है और आयात-निर्यात का काम करने नेपाल आया है। संदेश शर्मा के नाम से रोहित ने संगीता और उसके परिवार से मिलना-जुलना शुरू किया। उसने शर्मा उपनाम इसलिए

चुना क्योंकि संगीता के परिवार का उपनाम भी शर्मा था। शर्मा उपनाम का इस्तेमाल करने से उनकी शादी में कोई परेशानी नहीं आएगी।
संगीता और रोहित का प्यार बढ़ता ही गया, और पूरे 1996 में रोहित नेपाल और मुंबई के बीच अपना समय बांटता रहा। काठमांडू में रहते हुए, रोहित वर्मा ने खुद को संदेश शर्मा के रूप में पेश किया, जो एक निर्यात-आयात व्यवसायी था। काठमांडू के लोगों के लिए, रोहित वर्मा का रूप बदलकर संदेश शर्मा हो गया था, जो निर्यात-आयात उद्योग में एक सफल व्यवसायी था। रोहित वर्मा और संदेश शर्मा के रूप में उसका यह दोहरा जीवन छोटा राजन के गिरोह के लिए फायदेमंद साबित होने लगा।
संगीता और रोहित का प्यार 1996 में परवान चढ़ने लगा। रोहित पूरा साल नेपाल में ही बिताता था, लेकिन कभी-कभार मुंबई आता रहता था। काठमांडू में रहने वालों के लिए रोहित अब संदेश शर्मा बन चुका था, जो एक निर्यात-आयात व्यवसायी था। रोहित वर्मा अपनी एक नई पहचान बना रहा था, और अपनी असली पहचान, खासकर संगीता और उसके परिवार से, छुपा रहा था।
छोटा राजन मुंबई में अपने गिरोह की गतिविधियों के लिए कुख्यात हो रहा था, जिनमें जबरन वसूली और जमीन के सौदे शामिल थे। इसी बीच, छोटा राजन अपने गिरोह के संचालन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ा रहा था, जिसमें नकली डॉलर, सुपारी लेकर हत्याएं और मादक पदार्थों के सौदे शामिल थे, खासकर दक्षिण पूर्व एशिया में।
(अगली किताब में छोटा राजन के जाली डॉलर और मैंड्रैक्स के बारे में अंदरूनी जानकारी दी जाएगी।)
1996 के अंत में, रोहित ने संगीता के परिवार से शादी के बारे में बातचीत शुरू की और संगीता के परिवार ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वे संगीता शर्मा की शादी रोहित वर्मा से इसलिए चाहते थे क्योंकि रोहित ने खुद को नेपाल के एक ब्राह्मण व्यापारी संदेश शर्मा के रूप में पेश किया था, जो एक सभ्य जीवन जी रहा था। हर परिवार चाहता है कि उनकी बेटी की शादी एक अच्छे परिवार में हो और वह सुखी जीवन व्यतीत करे, और संगीता के परिवार की भी यही इच्छा थी।
शादी के लिए परिवार का सहयोग आवश्यक होता है, और मुंबई में रहने वाले रोहित वर्मा के परिवार का रोहित से कोई संबंध नहीं था। रोहित वर्मा संगीता से शादी करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। इसलिए, उन्होंने नेपाल में एक परिवार

बसाया जो संगीता के परिवार को औपचारिक रूप से शादी का प्रस्ताव दे सके। उन्होंने रवि पुजारी को अपना छोटा भाई और उनकी पत्नी पद्मा को अपनी भाभी बनाया। इन सभी ने मिलकर एक परिवार बनाया और संगीता के घर जाकर रिश्ते का प्रस्ताव रखा। शादी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया और 13 फरवरी, 1997 को शादी की तारीख तय की गई।
जनवरी 1997 की शुरुआत में, छोटा राजन ने रोहित वर्मा से संपर्क किया और उसे दत्ता सामंत की हत्या का काम सौंपा। दत्ता सामंत की सुपारी लेकर हत्या करने के लिए छोटा राजन को मोटी रकम मिली थी। छोटा राजन सुपारी लेकर हत्या करने के कामों में शामिल था और कभी-कभी ऐसे काम करता था। इस बार उसे दत्ता सामंत की हत्या का ठेका मिला था, जो एक राजनेता थे और 1984 से 1989 तक सांसद रहे थे।
छोटा राजन के आदेश मिलने के बाद, रोहित वर्मा काठमांडू से मुंबई लौटा और अपने साथियों के साथ मिलकर 16 जनवरी, 1997 को दत्ता सामंत की हत्या कर दी। दत्ता सामंत की हत्या में मुख्य रूप से रोहित वर्मा, बब्ब्या, बंटी पांडे, अरुण महाजन और जो फर्नांडीस शामिल थे। दत्ता सामंत की हत्या के बाद, ये सभी लोग एक-एक करके काठमांडू पहुंचे और रोहित द्वारा काठमांडू में बनाए गए सुरक्षित ठिकाने में रहने लगे।
दत्ता सामंत की हत्या के बाद पुलिस जांच में पता चला कि दत्ता सामंत अपनी टाटा सूमो कार से घर से दफ्तर जा रहे थे। उनकी कार के आगे एक साइकिल सवार खड़ा था, जो उनका रास्ता रोक रहा था और कार को आगे नहीं जाने दे रहा था। दत्ता सामंत की कार ने कई बार साइकिल सवार को ओवरटेक करने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो पाई। इसी बीच, कुछ हमलावर पीछे से आए और दत्ता सामंत को गोली मार दी। साइकिल सवार कोई और नहीं बल्कि रोहित वर्मा ही था, जिसने मजदूर का वेश बनाकर साइकिल चलाई थी।
हत्या के बाद, योजना यह थी कि इसमें शामिल सभी लोग एक-दूसरे से अलग होकर सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके एक निर्धारित स्थान पर मिलेंगे। यह स्थान बदलापुर में था। बदलापुर को स्थान के रूप में चुनने का कारण यह था कि यदि कोई वहां नहीं आता, तो यह संकेत मिलता कि कुछ गड़बड़ हुई है या किसी को पुलिस या जनता ने पकड़ लिया है। बदलापुर में सभी लोग मिले और वहां से वे सुरक्षित रूप से नेपाल लौटने के लिए अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े।

सार्वजनिक परिवहन का एक और फायदा यह था कि किसी भी घटना के बाद, पुलिस आमतौर पर चौकियां लगाती है और स्कूटर, वैन और कारों जैसे निजी वाहनों की गहन जांच करती है। हालांकि, इन चौकियों पर सार्वजनिक परिवहन वाहनों की जांच उतनी सख्ती से नहीं की जाती। इसलिए, रोहित वर्मा और उसके साथी ऐसी किसी भी घटना के बाद अधिकारियों की शंका और जांच से बचने के लिए अक्सर सार्वजनिक परिवहन का सहारा लेते थे।
दत्ता सामंत की हत्या के बाद जब रोहित वर्मा काठमांडू लौटा, तो उसका हृदय परिवर्तन होने लगा। उसे अपनी होने वाली पत्नी संगीता के सामने अपनी असली पहचान उजागर करने की आवश्यकता महसूस हुई। उसने कबूल किया कि उसका असली नाम धर्मेंद्र पांडे था, संदेश शर्मा नहीं, और वह मुंबई के सबसे वांछित अपराधियों में से एक था, जिसका संबंध छोटा राजन के गिरोह से था। उसने बताया कि अपराध की दुनिया में वह रोहित वर्मा के नाम से कुख्यात था।
कहते हैं ना, प्यार हर बाधा को पार कर लेता है, और रोहित (अब धर्मेंद्र) के लिए संगीता का प्यार सच्चाई जानने के बाद और भी मजबूत हो गया। इस चौंकाने वाले खुलासे के बावजूद, संगीता ने रोहित को नहीं छोड़ा और उनका प्यार कायम रहा।
13 फरवरी 1997 को रोहित और संगीता का विवाह हुआ। विवाह समारोह में केवल कुछ करीबी मित्र और परिवार के सदस्य ही शामिल हुए, क्योंकि रामकृपाल पांडे के नेतृत्व में रोहित का परिवार समारोह में शामिल नहीं हुआ। विवाह में शामिल होने वाले और खुशी से नाचने वाले मेहमानों में बंटी पांडे, अरुण महाजन, रवि पुजारी, पद्मा पुजारी, बेबी और मुंबई से आए कुछ अन्य मित्र शामिल थे। कुल मिलाकर, रोहित वर्मा, जिन्हें संदेश शर्मा के नाम से भी जाना जाता है, की शादी में लगभग 12-14 अतिथि उपस्थित थे।
शादी के बाद, रोहित वर्मा उर्फ संदेश शर्मा और उनकी पत्नी काठमांडू से नेपाल के एक अन्य शहर बिराटनगर चले गए। काठमांडू के अलावा, बिराटनगर भी छोटा राजन के गिरोह का सुरक्षित ठिकाना बन गया था। शादी के बाद, रोहित वर्मा ने नेपाल में संदेश शर्मा नाम से पासपोर्ट के लिए आवेदन किया और कुछ समय बाद उन्हें संदेश शर्मा नाम से नेपाली पासपोर्ट मिल गया।
नेपाल में रोहित वर्मा की शादी के बाद, अरुण महाजन मुंबई आता है और रोहित वर्मा उसे एक फ्लैट दे देता है। रोहित वर्मा ने यह फ्लैट छोटा राजन के गिरोह में जबरन वसूली से कमाए पैसों से खरीदा था। रोहित वर्मा ने यह फ्लैट

अरुण महाजन को उसकी दोस्ती और वफादारी के इनाम के तौर पर दिया था। यह फ्लैट अरुण महाजन की प्रेमिका के नाम पर था। 1997 में होली के त्योहार के लगभग 12-13 दिन बाद, मुंबई पुलिस के मुठभेड़ विशेषज्ञ द्वारा अरुण महाजन की मुठभेड़ में हत्या कर दी गई। कुछ लोगों का यह भी दावा है कि अरुण महाजन की प्रेमिका ने ही पुलिस को उसके बारे में सूचना दी थी। मुठभेड़ के बाद अरुण महाजन की कमाई और फ्लैट उसकी प्रेमिका ने जब्त कर लिया। रोहित वर्मा अपने दोस्त अरुण महाजन की मौत से बहुत दुखी हुआ और उसने कुछ दिनों तक खाना-पीना छोड़ दिया।
नेपाल से मुंबई में जबरन वसूली का धंधा चलाकर रोहित वर्मा ने काफी धन इकट्ठा कर लिया था। वह अन्य बड़े आपराधिक संगठनों की तरह ही अपनी अवैध कमाई को वैध बनाना चाहता था। छोटा राजन से गहन विचार-विमर्श और बातचीत के बाद रोहित वर्मा ने नेपाल में एक एयरलाइन शुरू करने का विचार बनाया। 1997-98 में नेपाल में एक नई निजी चार्टर एयरलाइन शुरू करने के लिए बैठकें शुरू हुईं। रोहित वर्मा, उर्फ संदेश शर्मा, ने इसे निवेश का एक बेहतरीन अवसर समझा और उस एयरलाइन में निवेश करने के बारे में बातचीत शुरू की, जो अंततः उसके लिए एक महत्वपूर्ण उद्यम बन गया।
1997 में, छोटा राजन को मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या का आदेश मिला, लेकिन यह आदेश देने वाले की पहचान आज तक अज्ञात है। छोटा राजन ने अपने आदमियों को मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या का काम सौंपा। रोहित वर्मा, जो उस समय नेपाल में था, का मानना था कि नेपाल में मिर्ज़ा दिलशाद बेग की मौजूदगी के कारण उन्हें मारना आसान होगा। हालांकि, मिर्ज़ा दिलशाद बेग कोई आम नागरिक नहीं थे; वे नेपाल में एक राजनेता और सरकारी मंत्री थे। वे हमेशा कड़ी सुरक्षा में रहते थे। रोहित वर्मा और उसके साथियों द्वारा मिर्ज़ा दिलशाद बेग पर लगातार नज़र रखने के बावजूद, उन्हें उन पर जानलेवा हमला करने का मौका नहीं मिला।
ऑपरेशन रुक जाने से छोटा राजन हताश हो रहा था और उसे ठेका देने वाले लोग उस पर दबाव डाल रहे थे। छोटा राजन ने बरेली जेल में बंद बबलू श्रीवास्तव से मदद मांगी। बबलू श्रीवास्तव मिर्ज़ा दिलशाद बेग को पहले से जानता था और मिर्ज़ा दिलशाद बेग ने ही बबलू श्रीवास्तव को नेपाली नागरिकता और नेपाली पासपोर्ट दिलवाने में मदद की थी, जो अरुण अग्रवाल के नाम पर पंजीकृत था।

बबलू श्रीवास्तव नेपाल में मिर्ज़ा दिलशाद बेग के साथ रह रहा था, इसलिए वह मिर्ज़ा दिलशाद बेग की कमजोरियों से भली-भांति परिचित था।
बबलू श्रीवास्तव ने एक योजना बनाई, जिसमें अर्चना शर्मा ने अहम भूमिका निभाई। अर्चना शर्मा बबलू श्रीवास्तव के लिए काम कर रही थी। योजना को अंजाम देने के लिए बबलू ने अर्चना शर्मा को मनीषा अग्रवाल नाम से एक नई पहचान दी और उसे नेपाल के काठमांडू भेज दिया। मनीषा अग्रवाल के रूप में अर्चना शर्मा ने मिर्जा दिलशाद बेग से संपर्क करना शुरू कर दिया। समय के साथ, मिर्जा दिलशाद बेग, जो उसके असली इरादों से अनजान थे, उसकी खूबसूरती पर मोहित हो गए। बबलू के निर्देशों का पालन करते हुए, मनीषा अग्रवाल ने धीरे-धीरे मिर्जा दिलशाद बेग को अपने प्रेम जाल में फंसा लिया।
मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या की योजना 1997 में लगातार चलती रही। उसी वर्ष, रवि पुजारी की दूसरी बेटी का जन्म नेपाल में हुआ, जिसका नाम उन्होंने मौली रखा। रवि पुजारी की बड़ी बेटी का नाम डॉली था। रवि पुजारी की दूसरी बेटी को जन्म से ही नेपाली नागरिकता प्राप्त थी। 1997 में, जब मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या की योजना पर काम चल रहा था, मुंबई का अंडरवर्ल्ड भी अपने चरम पर था। छोटा राजन और डी-कंपनी एक-दूसरे के साथियों को सक्रिय रूप से खत्म कर रहे थे।
इस गिरोहवार के दौरान, छोटा राजन को संदेह हुआ कि उसके अपने गिरोह के कुछ सदस्य दाऊद इब्राहिम के साथ मिलकर काम कर रहे थे।

छोटा राजन को सूचना मिली कि उसका भरोसेमंद सहयोगी मोहन कोटियन डी-कंपनी के सदस्यों से मिला था और डी-कंपनी के लिए काम कर रहा था। इस खबर से मोहन कोटियन की छोटा राजन के प्रति वफादारी पर संदेह पैदा हो गया।
छोटा राजन का मानना था कि मोहन कोटियन, डी-कंपनी के छोटा शकील के संपर्क में था। मोहन कोटियन छोटा राजन के लिए वित्तीय और हवाला लेनदेन संभालता था। छोटा राजन ने रोहित को मोहन कोटियन को खत्म करने और उसके कारोबार को बाधित करने का काम सौंपा।
1997 की दिवाली के दौरान, रोहित वर्मा अपनी पत्नी संगीता और निशानेबाजों की एक टीम के साथ बेंगलुरु पहुंचे। उनकी मुलाकात मोहन कोठियन से हुई और मुलाकात के बाद, रोहित वर्मा और उनकी पत्नी, निशानेबाजों की टीम के साथ, कुछ दिनों के लिए मोहन कोठियन के घर पर मेहमान बनकर रुके। मोहन कोठियन के घर पर रहते हुए, रोहित वर्मा को एहसास हुआ कि उन्हें वहाँ मारना आसान नहीं होगा। इसलिए, रोहित वर्मा ने सुझाव दिया कि वे आशीर्वाद लेने के लिए तिरुपति चलें। तिरुपति जाते समय, रोहित वर्मा ने मोहन कोठियन की हत्या कर दी। मोहन कोठियन की हत्या में रोहित वर्मा, नानू, बंटी पांडे, मुन्ना और जो फर्नांडीस शामिल थे। रोहित वर्मा ने बेंगलुरु के दो स्थानीय अपराधियों को

भी इस हत्या में शामिल किया था। हत्या के बाद, रोहित वर्मा अपनी पत्नी और टीम के साथ नेपाल लौट गए।
(मैंने मोहन कोठियन की हत्या की पूरी कहानी अपनी श्रृंखला "दास्तान कहानी अनसुनी" के तीसरे सीज़न में विस्तार से बताई है, जो वर्तमान में यूट्यूब पर उपलब्ध है।)
दूसरी ओर, अर्चना शर्मा उर्फ मनीषा अग्रवाल बबलू के निर्देशों का पालन करती रही। वह नेपाल में बबलू के खास संपर्क मनजीत सिंह उर्फ मांगे को मिर्जा दिलशाद बेग से जुड़ी हर जानकारी देती रही। बबलू ने छोटा राजन को अपने कुछ निशानेबाजों को नेपाल भेजने का निर्देश दिया, और छोटा राजन के निशानेबाजों को नेपाल में मनजीत सिंह उर्फ मांगे के साथ काम करना था। छोटा राजन ने मुंबई से फरीद तनाशा को नेपाल भेजा। 29 जून, 1998 को फरीद तनाशा ने मनजीत सिंह उर्फ मांगे और अन्य साथियों के साथ मिलकर मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या कर दी। मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या के बाद, छोटा राजन ने एक भारतीय मीडिया चैनल को फोन करके बताया कि उसके आदमियों ने नेपाल में मिर्जा दिलशाद बेग को मार डाला है। छोटा राजन ने यह भी दावा किया कि मिर्जा दिलशाद बेग दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तान की आईएसआई के लिए काम कर रहा था, यही कारण है कि छोटा राजन ने अपने गिरोह के सदस्यों को नेपाल में मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या करने का आदेश दिया था।
(मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या की पूरी कहानी और बबलू द्वारा अपने दोस्त मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या करवाने के पीछे के कारणों को मैंने अपनी सीरीज़ "दास्तान कहानी अनसुनी" सीज़न 2 में बताया है, जो वर्तमान में यूट्यूब पर उपलब्ध है।)
मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या के बाद नेपाल में तनाव बढ़ गया और नेपाली पुलिस ने अपनी कार्रवाई तेज कर दी। छोटा राजन के इशारे पर मुंबई से नेपाल आए उसके निशानेबाज और रोहित वर्मा इस कार्रवाई से चिंतित हो गए। अधिकारियों से बचने के लिए रोहित वर्मा ने सबको कुछ दिनों के लिए नेपाल छोड़ने को कहा। 9 जुलाई 1998 को फरीद तनाशा और रोहित वर्मा अपनी-अपनी टीमों के साथ नेपाल से दिल्ली पहुंचे। रोहित वर्मा के साथ नेपाल से फरीद तनाशा, संगीता शर्मा, रवि पुजारी और बंटी पांडे आए थे। कुल मिलाकर 11 लोग नेपाल से दिल्ली पहुंचे।

मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या से पहले, रवि पुजारी की पत्नी पद्मा पुजारी अपनी दो बेटियों के साथ भारत लौट गई थीं। मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या के बाद, जब रोहित वर्मा दिल्ली आते हैं, तो उनकी पत्नी संगीता शर्मा सात महीने की गर्भवती होती हैं। जब रोहित वर्मा अपनी पत्नी संगीता शर्मा और अपने दल के साथ दिल्ली पहुंचते हैं, तो नेपाली पुलिस रोहित वर्मा के ससुराल पर छापा मारती है और मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या में संलिप्तता के आरोप में रोहित वर्मा के साले और उनके परिवार के खिलाफ मामला दर्ज करती है। रोहित वर्मा के साले के खिलाफ मामला दर्ज होने पर, सरकारी नियमों के अनुसार उन्हें नेपाल टेलीकॉम में अपनी सरकारी नौकरी से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया जाता है। सरकारी नियमों के अनुसार, यदि कोई सरकारी कर्मचारी किसी आपराधिक मामले में शामिल होता है, तो सरकार उसे नौकरी से निलंबित कर देती है। रोहित वर्मा के साले के मामले में, नेपाली सरकार ने उन्हें निलंबित कर दिया। रोहित वर्मा के साले को मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या की कोई जानकारी नहीं थी। पुलिस ने रोहित वर्मा के बहनोई के खिलाफ मामला इस सोच के साथ दर्ज किया कि इससे रोहित वर्मा पर दबाव पड़ेगा और वह आत्मसमर्पण कर देगा, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि इससे हमलावर और रोहित वर्मा भी पकड़े जाएंगे। हालांकि, तब तक रोहित वर्मा नेपाली पुलिस की पकड़ से बहुत दूर जा चुका था।
दिल्ली में रोहित वर्मा अपनी पत्नी और टीम के साथ हवाई अड्डे के पास एक होटल में ठहरे हुए थे। सभी अलग-अलग होटलों में ठहरे हुए थे और रोहित वर्मा ने उन्हें निर्देश दिया था कि अगर कोई उन्हें पकड़ने की कोशिश करे तो वे अलग-अलग रहें ताकि कोई भी एक साथ न पकड़ा जाए। इसलिए, सभी अलग-अलग होटलों में ठहरे हुए थे। रोहित वर्मा ने सभी के मिलने के लिए एक निश्चित समय और स्थान तय किया था, जो उनके होटल के पास ही था। वे सभी वहीं मिलते और साथ मिलकर दिल्ली घूमते। उन्होंने दिल्ली में दर्शनीय स्थलों की सैर की, खाना खाया, फिल्में देखीं और नेपाल से भागने के बाद अपनी छुट्टियों का आनंद लिया। एक शाम, जब वे अलग-अलग होकर अपने-अपने होटलों में चले गए, तो मुंबई में रवि पुजारी ने दिल्ली के एक पीसीओ बूथ से फिरौती का फोन किया। पीसीओ बूथ पर दिल्ली क्राइम ब्रांच का एक कांस्टेबल वर्दी में खड़ा था, जिसने रवि पुजारी की पूरी फिरौती की कॉल सुन ली। जब रवि पुजारी कॉल करने के बाद अपने होटल लौट रहा था, तो दिल्ली क्राइम ब्रांच का कांस्टेबल उसके पीछे-

पीछे होटल पहुँच गया। हुआ यूं कि रवि पुजारी अपने होटल में नहीं गया; बल्कि वह रोहित वर्मा के होटल में चला गया। उसका पीछा कर रहे कांस्टेबल ने दिल्ली हवाई अड्डे के पास एक होटल से अपने इंस्पेक्टर को फोन किया और उसे फिरौती की पूरी घटना की जानकारी दी। दिल्ली क्राइम ब्रांच की एक टीम ने उस होटल पर छापा मारा और रोहित वर्मा, उसकी पत्नी संगीता, रवि पुजारी और बंटी पांडे को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के दौरान पुलिस इंस्पेक्टर ने रोहित वर्मा और अन्य लोगों को कुछ भी बोलने नहीं दिया। इंस्पेक्टर उन्हें पास के दिल्ली क्राइम ब्रांच पुलिस स्टेशन ले गया।
पुलिस स्टेशन में क्राइम ब्रांच इंस्पेक्टर उनसे फिरौती के फोन कॉल के बारे में पूछताछ शुरू करता है। अपराधी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, क्राइम ब्रांच के सामने हर अपराधी सच उगल देता है। रवि पुजारी क्राइम ब्रांच के सामने घबराया हुआ था और कुछ बोलने ही वाला था कि इससे पहले कि रवि पुजारी कुछ कह पाता, रोहित वर्मा आगे बढ़ जाता है। सबसे पहले, रोहित वर्मा अपना नेपाली पासपोर्ट दिखाता है, जो संदेश शर्मा के नाम से है, और दावा करता है कि वह दिल्ली में एक पर्यटक है। इसके अलावा, रोहित वर्मा फोन करने की अनुमति मांगता है, जो उसे दे दी जाती है।
रोहित वर्मा ने छोटा राजन को फोन किया और फोन पर पूरी घटना विस्तार से बताई। रोहित वर्मा की कहानी सुनने के बाद, छोटा राजन ने दिल्ली में एक खास व्यक्ति को फोन किया। छोटा राजन के फोन के बाद, एक वकील दिल्ली क्राइम ब्रांच पुलिस स्टेशन पहुंचा, जहां रोहित वर्मा और अन्य लोगों को हिरासत में रखा गया था। वकील ने इंस्पेक्टर से बात की और बिना किसी औपचारिक कार्यवाही के रोहित वर्मा और बाकी लोगों को रिहा करवा लिया।
(मेरी जांच के दौरान यह भी पता चला कि जब दिल्ली क्राइम ब्रांच ने रोहित वर्मा और उसके साथियों को दिल्ली में गिरफ्तार किया, और जब रोहित वर्मा ने छोटा राजन को फोन किया, तो छोटा राजन ने दिल्ली के एक उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी को फोन किया। उस अधिकारी ने एक वकील भेजा, और उस वकील ने अधिकारी और इंस्पेक्टर के बीच बातचीत करवाई। अधिकारी से बात करने के बाद, रोहित वर्मा और उसके साथियों को बिना किसी औपचारिकता के रिहा कर दिया गया। मुझे इस अधिकारी की पहचान या उसके विभाग के बारे में कोई जानकारी नहीं है, लेकिन यह भी सच है कि सरकारी अधिकारियों के अक्सर प्रमुख गैंगस्टरों के साथ संबंध और गठबंधन देखे जाते हैं।)

क्राइम ब्रांच के चंगुल से बच निकलने के बाद, रोहित वर्मा ने रवि पुजारी को खरी-खोटी सुनाई। रवि पुजारी शुरू से ही बहुत बातूनी था, और इसी बात की वजह से वह दिल्ली की क्राइम ब्रांच के शिकंजे में आ गया। मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या के बाद नेपाल जाना समझदारी भरा फैसला नहीं था, क्योंकि नेपाल में पुलिस रोहित वर्मा की सक्रिय रूप से तलाश कर रही थी और उसके साले को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। नेपाल पुलिस को उसके साले के ज़रिए बीरतनगर स्थित रोहित वर्मा के घर की जानकारी भी मिल गई थी, जिससे रोहित वर्मा के लिए अपनी गर्भवती पत्नी संगीता और बाकी टीम के साथ नेपाल जाना नामुमकिन हो गया था। इसी बीच, मुंबई में भी गैंगवार चल रही थी, इसलिए वहां जाना जोखिम भरा था। रोहित वर्मा ने नेपाल में काफी निवेश किया था, एक सेफ हाउस बनवाया था और एक एयरलाइन में निवेश करने की योजना बना रहा था। अगर मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या न हुई होती, तो शायद आज छोटा राजन और रोहित वर्मा एयरलाइन के मालिक होते।
इस समय रोहित वर्मा को एक नए सुरक्षित ठिकाने की आवश्यकता थी, और इसका इंतजाम कर दिया गया। रवि पुजारी ने रोहित को बताया कि उनके बहनोई (सादु भाई - रवि पुजारी की पत्नी के बहनोई) उत्तर प्रदेश के सहारनपुर के पास रहते हैं, और रवि पुजारी की पत्नी पद्मा पुजारी भी अपनी बहन के साथ सहारनपुर के एक गाँव में रहती हैं। रवि पुजारी ने सुझाव दिया कि वे सभी सहारनपुर चले जाएँ। जुलाई 1998 के मध्य में, रोहित वर्मा संगीता शर्मा और रवि पुजारी के साथ सहारनपुर पहुँचे। वे रवि पुजारी के बहनोई (सादु भाई - रवि पुजारी की पत्नी के बहनोई) के साथ रहने लगे। अगस्त 1998 में, रोहित वर्मा ने सहारनपुर में नए पासपोर्ट के लिए आवेदन किया, और सितंबर 1998 में, संगीता शर्मा ने सहारनपुर के एक अस्पताल में एक बेटी को जन्म दिया। बेटी के जन्म के कुछ ही दिनों बाद, रोहित वर्मा को सहारनपुर में नया पासपोर्ट मिल गया। इस पासपोर्ट पर माइकल डिसूजा का नाम था। सितंबर 1998 में, रोहित वर्मा आधिकारिक तौर पर माइकल डिसूजा बन गए।
रोहित वर्मा ने सहारनपुर से जो पासपोर्ट हासिल किया था, वह जाली दस्तावेजों की मदद से बनाया गया था। अपराधी अक्सर असली पासपोर्ट का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनमें दी गई पहचान की जानकारी फर्जी होती है। असली पासपोर्ट बनवाने के लिए वे अक्सर हाई स्कूल की मार्कशीट में हेराफेरी करते थे। उस समय नकली मार्कशीट बनाना अपेक्षाकृत आसान था। यह भी

सच है कि ग्रामीण इलाकों में लोग कभी-कभी पैसे के लिए अपनी हाई स्कूल की मार्कशीट बेच देते थे।
पहले पासपोर्ट बनवाने के लिए जन्म प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होती थी। केवल दसवीं कक्षा की मार्कशीट ही काफी होती थी। रोहित वर्मा ने माइकल डिसूजा नाम की मार्कशीट का इस्तेमाल किया और इसी नाम से उन्होंने सहारनपुर में अपना पासपोर्ट बनवाया। ऐसे पासपोर्ट बनवाने के लिए एजेंट पैसे लेकर पासपोर्ट बनवा देते थे। रोहित वर्मा ने माइकल डिसूजा नाम से पासपोर्ट बनवाने के लिए एक एजेंट को 25,000 रुपये दिए।
माइकल डिसूजा नाम से पासपोर्ट बनवाने का एक और कारण यह था कि मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या के बाद रोहित वर्मा का नेपाली नाम संदेश शर्मा, डी कंपनी और मुंबई पुलिस की नजर में आ गया था। मुंबई पुलिस और डी कंपनी दोनों ही दुनिया भर में संदेश शर्मा नाम के व्यक्ति का पता लगा सकती थीं। मुंबई पुलिस और डी कंपनी से बचने के लिए रोहित वर्मा ने माइकल डिसूजा नाम से पासपोर्ट बनवा लिया।
रोहित वर्मा अपनी असली पहचान छिपाने के लिए हर नई जगह पर अलग-अलग नाम इस्तेमाल करता था। उसने बबलू नाम से जीवन की शुरुआत की, लेकिन स्कूल में उसके परिवार ने उसका नाम धर्मेंद्र पांडे रख दिया। आपराधिक गतिविधियों के लिए उसने रोहित वर्मा नाम का इस्तेमाल किया, शादी करने और नेपाली पासपोर्ट पाने के लिए उसने संदेश शर्मा नाम अपनाया और अब वह माइकल डिसूजा के नाम से जाना जाता है। अपराध की दुनिया में, अपराधियों, डॉन या माफिया की कोई असली पहचान नहीं होती। जीवित रहने के लिए उन्हें समय-समय पर अपने नाम और पहचान बदलनी पड़ती है। और बबलू, जिसे धर्मेंद्र पांडे, रोहित वर्मा, संदेश शर्मा और माइकल डिसूजा के नाम से भी जाना जाता है, ठीक यही कर रहा था।
19 अक्टूबर 1998 को सहारनपुर में दिवाली का त्योहार बड़े उत्साह से मनाया गया। रोहित वर्मा ने रवि पुजारी के भाई सादु के परिवार के साथ दिवाली का त्योहार धूमधाम से मनाया। दिवाली के बाद, रोहित वर्मा ने माइकल डिसूजा नाम के पासपोर्ट का इस्तेमाल करते हुए दिल्ली से हांगकांग की यात्रा की। जब रोहित वर्मा माइकल डिसूजा बनकर हांगकांग पहुंचे, तब छोटा राजन अशोक शेट्टी और ओपी सिंह के साथ मलेशिया में था। इसी बीच, हांगकांग में हेमंत पुजारी और गुरु सतम भी मौजूद थे। रोहित वर्मा, उर्फ माइकल डिसूजा, हांगकांग में हेमंत पुजारी और गुरु सतम से मिल गया। हांगकांग छोटा राजन के

गिरोह के प्रमुख सदस्यों के लिए एक सुरक्षित ठिकाना बन गया था। छोटा राजन मलेशिया, सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया में रहते हुए हांगकांग के नंबर +85298124134 का इस्तेमाल करता था। यह हांगकांग नंबर अब सक्रिय नहीं है, लेकिन 2023 में भी ट्रूकॉलर पर इससे जुड़ा नाम राजन नाना दिखाई देता है। दूसरी ओर, दाऊद इब्राहिम की डी कंपनी भी बड़े दृढ़ संकल्प के साथ छोटा राजन की तलाश में जुटी हुई थी। डी कंपनी को पूरी तरह से पता था कि रोहित वर्मा ही गिरोह की गतिविधियों का संचालन कर रहा था, उसके सदस्यों का प्रबंधन कर रहा था और मुंबई में कमाए गए धन का हिसाब-किताब संभाल रहा था। रोहित वर्मा के नेतृत्व में मुंबई में छोटा राजन का प्रभाव और प्रतिष्ठा लगातार बढ़ रही थी। रोहित वर्मा के प्रभाव के कारण ही मुंबई में छोटा राजन का रुतबा बढ़ रहा था। गिरोह युद्ध में संघर्ष सत्ता और प्रतिष्ठा के लिए होता है, और विरोधी गिरोह को जितना हो सके कमजोर करना ही उन्हें खत्म करने का सबसे तेज़ तरीका है।

रवि पुआजरी और रोहित वर्मा दिवाली मना रहे हैं सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

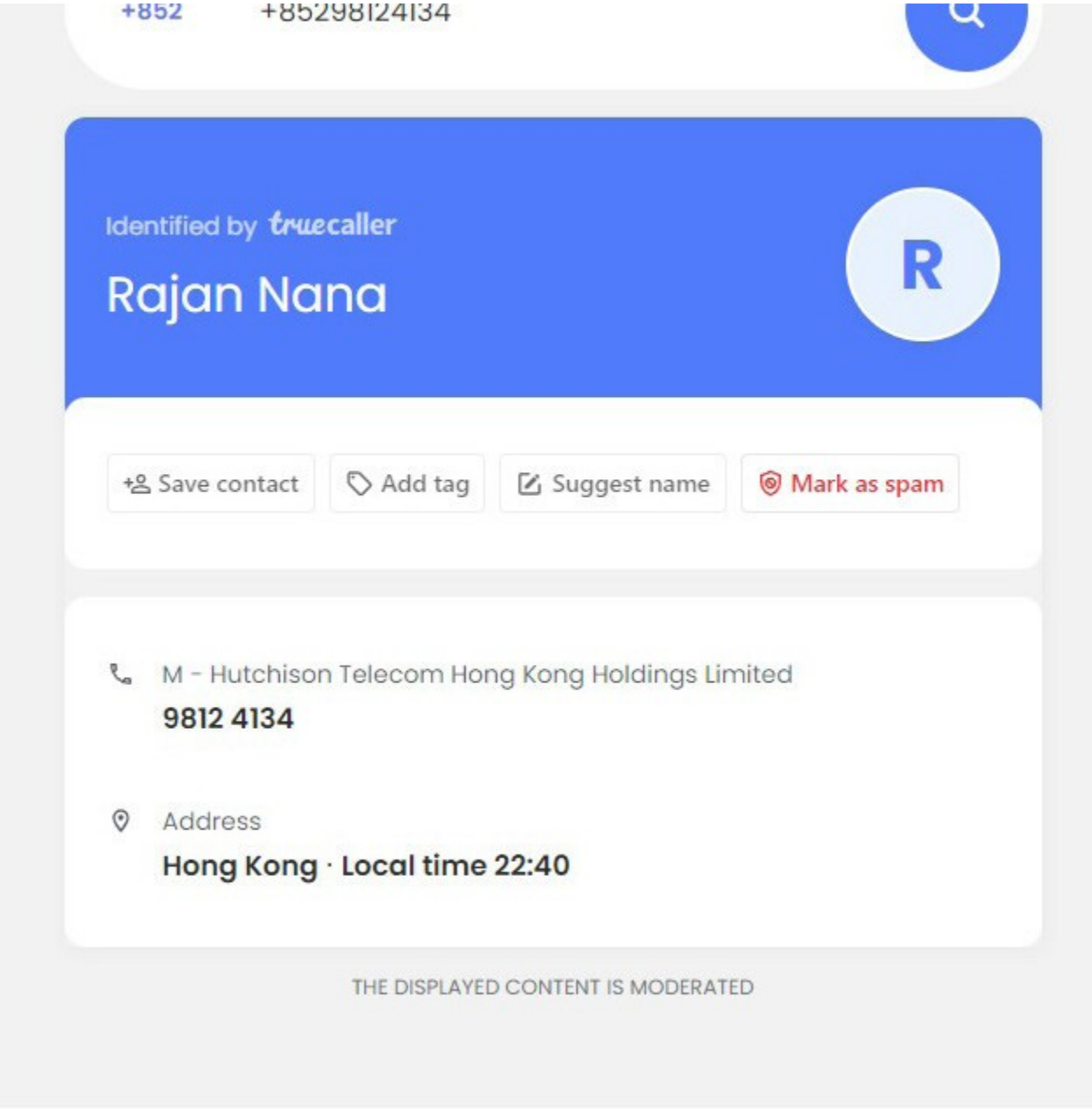
+852
+85298124134
Identified by truecaller
Rajan Nana
R
Save contact
Add tag
Suggest name
Mark as spam
M - Hutchison Telecom Hong Kong Holdings Limited
9812 4134
Address
Hong Kong · Local time 22:40
THE DISPLAYED CONTENT IS MODERATED

[illegible]

छोटा राजन और डी कंपनी ने एक-दूसरे के कई निशानेबाजों को मार गिराया, लेकिन छोटा राजन का गिरोह नए निशानेबाजों की भर्ती करता रहा, जिनमें से कई शुरू में देशभक्ति से प्रेरित थे।
डी कंपनी का सबसे खास आदमी, जिसे आमतौर पर छोटा शकील के नाम से जाना जाता था, छोटे राजन की तलाश में पूरी लगन से जुटा हुआ था। इस मिशन के लिए छोटा शकील ने अपने कई साथियों को लगाया था। छोटा राजन अक्सर मलेशिया, हांगकांग, सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया की यात्रा करता था, और छोटा शकील ने उसका हांगकांग वाला फोन नंबर हासिल कर लिया था। छोटा शकील ने इस नंबर से जुड़े ठिकाने का पता लगाने की भी कोशिश की।
इस दौरान, छोटा राजन के गिरोह से जुड़े कई लोग अपनी जान बचाने के लिए उसका गिरोह छोड़कर छोटा शकील के गिरोह में शामिल हो गए। हालांकि, इन लोगों द्वारा छोटा राजन के बारे में दी गई जानकारी खास उपयोगी साबित नहीं हुई। उनके प्रयासों के बावजूद, छोटा शकील छोटा राजन का पता लगाने में सफल नहीं हो सका।
1998 में हांगकांग में भी राजनीतिक परिवर्तन हो रहे थे। इंग्लैंड ने 1997 में हांगकांग को चीन को सौंप दिया, जिससे इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव आए। इसी दौरान रोहित वर्मा ने छोटा राजन से एक ऐसे देश में नया ठिकाना स्थापित करने के विचार पर चर्चा की, जहां भारतीय आराम से रह सकें, व्यापार कर सकें और वीजा संबंधी समस्याओं का सामना न करना पड़े। ऐसा ही एक देश था थाईलैंड, जो दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित है और अपने विकास और आतिथ्य सत्कार के लिए प्रसिद्ध है। थाईलैंड ने कई विदेशियों को आकर्षित किया था, जो या तो वहां बस रहे थे या व्यवसाय स्थापित कर रहे थे, खासकर यूरोप के कुछ सबसे वांछित व्यक्तियों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह के रूप में। थाई नियमों के अनुसार, थाईलैंड में व्यापार करने के लिए आमतौर पर एक स्थानीय भागीदार का होना आवश्यक था। इससे थाई भागीदार को विदेशी व्यावसायिक उद्यमों से उत्पन्न आय में हिस्सेदारी मिलती थी, और यह भी सुनिश्चित होता था कि थाईलैंड में रहने वाले विदेशी उद्यमियों द्वारा अर्जित धन स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान दे।
जनवरी या फरवरी 1999 में, रोहित वर्मा हांगकांग से थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक पहुंचे। उन्होंने माइकल डिसूजा के छद्म नाम से बैंकॉक में प्रवेश किया था। हांगकांग में गुरु सतम और हेमंत पुजारी मौजूद थे, जबकि मलेशिया

में छोटा राजन के साथ अशोक शेट्टी और ओ.पी. सिंह थे। भरत नेपाली और संतोष शेट्टी भी इस दौरान दक्षिण पूर्व एशिया में कहीं थे।
कुछ समय बाद, ओ.पी. सिंह मुंबई लौट आए, और छोटा राजन, अशोक शेट्टी के साथ मलेशिया से ऑस्ट्रेलिया चले गए। छोटा राजन अक्सर मलेशिया, हांगकांग और ऑस्ट्रेलिया में देखे जाते थे। ऑस्ट्रेलिया में, अशोक शेट्टी के साथ उनका संबंध काफी चर्चित हो गया और वे अक्सर साथ-साथ देखे जाते थे।
रोहित वर्मा, जिसे माइकल डिसूजा के नाम से भी जाना जाता था, ने बैंकॉक में अपना नया अड्डा स्थापित करना शुरू कर दिया। मार्च 1999 तक, रोहित वर्मा ने माइकल डिसूजा के छद्म नाम से रवि पुजारी, संगीता शर्मा और गुरु सतम को भी बैंकॉक बुला लिया था। इसके अलावा, रोहित वर्मा अपनी प्रेमिका कमला को नेपाल से बैंकॉक ले आया।
गुरु सतम को बैंकॉक बुलाने का एक मुख्य कारण हांगकांग की बदलती राजनीतिक स्थिति थी। अपराधियों और माफिया गिरोहों को चिंता थी कि हांगकांग के चीन को सौंपे जाने के बाद कानून व्यवस्था और सख्त हो सकती है, जिससे इन गिरोहों का असली चेहरा सामने आ सकता है। ऐसे जोखिमों से बचने के लिए रोहित वर्मा ने गुरु सतम को बैंकॉक में अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया।
बैंकॉक में रोहित वर्मा ने दो अपार्टमेंट किराए पर लिए। वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ एक अपार्टमेंट में रहने लगे, जबकि दूसरे अपार्टमेंट में रवि पुजारी और गुरु सतम रहते थे।
माफिया गिरोह जब दूसरे देशों में सक्रिय होते हैं, तो वे अपनी गतिविधियों को छुपाने और नए परिवेश में शांतिपूर्ण जीवन सुनिश्चित करने के लिए गुमनाम रहना और कानूनी व्यवसायों में संलग्न होना पसंद करते हैं। यह तरीका उन्हें कानून प्रवर्तन एजेंसियों की अनावश्यक नज़र से बचने और देश से निकाले जाने के जोखिम से बचाता है।
रोहित वर्मा, जिन्हें माइकल डिसूजा के नाम से भी जाना जाता है, ने बैंकॉक, थाईलैंड में बसने के बाद इसी तरह का तरीका अपनाया। उन्होंने बैंकॉक में एक आभूषण की दुकान खोली ताकि कानूनी तौर पर अपना कारोबार स्थापित कर सकें। इस दुकान में गहनों का भरपूर भंडार था, जिससे यह देखने में वैध व्यवसाय लगता था। उन्होंने बैंकॉक के पॉश इलाके रॉबिन्सन शॉपिंग मॉल में अपनी दुकान के लिए एक प्रमुख स्थान चुना।

हालांकि, बैंकॉक में रोहित वर्मा के कानूनी व्यापारिक उद्यम केवल आभूषण की दुकान तक ही सीमित नहीं थे। उन्होंने राजनीतिक रूप से प्रभावशाली थाई व्यक्ति टीरा पोन के साथ साझेदारी में ईंट निर्माण के लिए एक ईंट कारखाना भी स्थापित किया। इस साझेदारी ने उन्हें अपने कानूनी व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार करने और स्थानीय व्यापार जगत में और अधिक घुलमिल जाने में सक्षम बनाया।
मुंबई से वसूली गई रकम अब बैंकॉक पहुँच रही थी, और उस समय मुंबई से बैंकॉक को हर महीने लगभग 70 से 80 लाख रुपये भेजे जाते थे। इस रकम का निवेश भी किया जा रहा था। मलेशिया के कुआलालंपुर में छोटा राजन ने रियल एस्टेट में निवेश किया, और सिंगापुर में भी फ्लैट और मॉल में निवेश किया। इसके अलावा, मुंबई में छोटा राजन ने "खुशी कंस्ट्रक्शन" नाम से अपनी खुद की रियल एस्टेट कंपनी शुरू की। रोहित वर्मा ने भी मुंबई में कुछ पैसा निवेश किया, जैसे कि चेंबूर में बार, ठाणे में फ्लैट, पुणे में प्लॉट और पनवेल में फार्महाउस।
ये सभी व्यक्ति भारत में बने जाली पासपोर्टों के साथ बैंकॉक में थे, और उनमें से किसी के पास भी बैंकॉक में रहने के लिए स्थायी निवास वीजा नहीं था। बैंकॉक में कारोबार स्थापित करने और स्थानीय साझेदार बनाने के बावजूद, रोहित वर्मा का स्थानीय निवास परमिट अभी भी लंबित था और उम्मीद से ज्यादा समय लग रहा था। बैंकॉक पहुंचने के बाद, रोहित वर्मा को शुरुआत में अपना कारोबार स्थापित करने और स्थानीय साझेदार खोजने में काफी समय लगा। बैंकॉक पहुंचने पर उन्हें 15 दिन का वीज़ा मिलता था, जिसे 7 से 15 दिन तक बढ़ाया जा सकता था। हालांकि, जब बढ़ा हुआ वीज़ा समाप्त होने वाला होता था, तो ये लोग अक्सर हांगकांग, कंबोडिया या लाओस की यात्रा करते थे। कंबोडिया और लाओस थाईलैंड से सड़क मार्ग से जुड़े हुए हैं और बैंकॉक से कुछ घंटों की ड्राइव पर स्थित हैं। भारतीय पासपोर्ट धारक कंबोडिया और लाओस में भी आगमन पर वीज़ा प्राप्त कर सकते हैं। जब उनका वीज़ा समाप्त होने वाला होता था, तो देश छोड़ना आवश्यक हो जाता था। इसलिए, कंबोडिया या लाओस की सीमा पार करके कुछ घंटों के लिए वहां रहने के बाद, वे बैंकॉक में रहने के लिए नए आगमन वीज़ा के साथ थाईलैंड लौट आते थे।
रोहित वर्मा और उनकी टीम मुख्य रूप से कंबोडिया की यात्रा पर गए। कंबोडिया में जुआ खेलना कानूनी है और देश भर में कैसीनो मौजूद हैं। रोहित वर्मा और

उनकी टीम नेपाल में भी रुके, जहाँ कैसीनो हैं। कंबोडिया के कैसीनो देखकर रोहित वर्मा और उनकी टीम को नेपाल की याद आ गई। इसलिए, इनमें से अधिकांश लोग कंबोडिया जाना चाहते थे। अपने थाई वीज़ा का नवीनीकरण कराने के लिए, रोहित वर्मा और उनकी टीम कंबोडिया के सीमावर्ती शहर पोई पेट गए, जो बैंकॉक से लगभग 260 किलोमीटर दूर है।

रोहित वर्मा और उनकी टीम, जिसमें रवि पुजारी, गुरु सतम, संगीता शर्मा, कमला और अन्य लोग शामिल थे, सुबह-सुबह बैंकॉक से निकलकर कुछ ही घंटों में थाई-कंबोडियन सीमावर्ती कस्बे पोई पेट पहुँच जाते थे। वे पूरा दिन पोई पेट में जुआ खेलते और थाई सीमा से वीज़ा लेकर शाम को बैंकॉक लौट आते थे। कई बार, वीज़ा की अवधि समाप्त होने से पहले रोहित वर्मा और उनकी टीम बैंकॉक से हांगकांग भी जाते थे। हांगकांग में वे अक्सर मुंबई से आए लोगों से मिलते या अन्य गिरोहों के सदस्यों के साथ व्यापारिक सौदे करते थे। हांगकांग में होने वाली इन मुलाकातों में आमतौर पर ज़मीन विवाद में उलझे बिल्डर या छोटा राजन के गिरोह द्वारा जबरन वसूली के निशाने पर रखे गए लोग शामिल होते थे। छोटा राजन हांगकांग में आयोजित बैठकों में भी भाग लेते थे, अक्सर ऑस्ट्रेलिया से आते थे। जब भी छोटा राजन ऑस्ट्रेलिया से हांगकांग की यात्रा करते थे, तो वे आमतौर पर मलेशिया या सिंगापुर से होकर गुजरते थे। रोहित वर्मा और छोटा राजन दोनों ही बाहर के किसी भी व्यक्ति को अपने सटीक ठिकाने की जानकारी नहीं देते थे। हांगकांग में बैठकों में भाग लेने वाले

लोगों का मानना था कि छोटा राजन और रोहित वर्मा दोनों हांगकांग में रह रहे हैं। हालांकि, वास्तविकता में, उनमें से कोई भी हांगकांग में नहीं रहता था। रोहित वर्मा और उनकी टीम बैंकॉक में थे, जबकि छोटा राजन ऑस्ट्रेलिया में थे। कभी-कभी छोटा राजन मलेशिया और सिंगापुर में भी समय बिताते थे, लेकिन उनका अधिकांश समय ऑस्ट्रेलिया में ही बीतता था।
बैंकॉक पहुंचने के बाद, रोहित वर्मा को स्थानीय निवास परमिट प्राप्त करने में काफी देरी का सामना करना पड़ा। स्थानीय निवास परमिट प्राप्त करने की प्रक्रिया काफी लंबी होती है। रोहित वर्मा बैंकॉक में एक सफल व्यवसायी के रूप में स्थापित हो चुके थे और स्थानीय लोग उन्हें माइकल डिसूजा के नाम से जानते थे, जो एक प्रसिद्ध आभूषण व्यापारी और ईंट कारखाने के मालिक थे। रोहित वर्मा के आभूषणों की दुकान में बिकने वाले आभूषणों में एक अनूठी चमक थी। अपराध जगत के सरगना, माफिया या डॉन भी सिर्फ पैसा कमाने के लिए इन गतिविधियों में शामिल नहीं होते थे; उनका उद्देश्य बहुत सारा पैसा कमाना होता था। इसलिए, रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा ने मुख्य रूप से दुबई से अवैध तरीकों से बैंकॉक में आभूषण लाने के लिए एक नेटवर्क स्थापित किया था। छोटा राजन का दुबई में एक नेटवर्क था, क्योंकि वह वहीं रहता था, और रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा ने इस नेटवर्क के माध्यम से दुबई से आभूषणों की तस्करी शुरू कर दी। कुछ व्यक्तियों को दुबई से बैंकॉक में आभूषण लाने का काम अलग से सौंपा गया था। बैंकॉक में बाहर से लाए जाने वाले आभूषणों पर सीमा शुल्क लागू था, और रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा ने इस सीमा शुल्क से बचने का एक तरीका खोज निकाला था। रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा का एक स्थानीय सहयोगी थारा पोन था, जिसका सरकार में अच्छा प्रभाव था। थारा पोन की सहायता से, रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा ने दुबई से बैंकॉक हवाई अड्डे पर बिना सीमा शुल्क चुकाए आने वाले आभूषणों की तस्करी शुरू कर दी। फिर इन आभूषणों को रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा की रॉबिन्सन मॉल लेन स्थित दुकान में बेचा जाता था। वे 30% आभूषण बैंकॉक में ही खरीदते थे। बैंकॉक में कई सुनार भी थे जो आभूषण बनाते थे। रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा को इस आभूषण व्यापार से काफी लाभ हुआ। उनके आभूषण की दुकान में अलग से बिक्री कर्मचारी थे। रोहित वर्मा या उनकी टीम नियमित रूप से दुकान से दैनिक बिक्री रिपोर्ट लेते थे। हालांकि दुकान कानूनी रूप से स्थापित थी,

लेकिन 70% गहने दुबई से तस्करी के माध्यम से आयात किए जा रहे थे और बैंकॉक में बेचे जा रहे थे।
बैंकॉक से मुंबई तक जबरन वसूली के अभियान चल रहे थे, और रवि पुजारी ही बैंकॉक से जबरन वसूली के कॉल संभाल रहा था। नेपाल में अपनाए गए हथकंडों की तरह ही, रवि पुजारी इन कॉलों के दौरान रोहित वर्मा का रूप धारण करता था। सिस्टम वही था, लोग भी वही थे; केवल स्थान बदला था, काठमांडू से बीरतनगर और अब बैंकॉक। रोहित वर्मा की आवाज कई लोगों को पहचान में नहीं आती थी क्योंकि वह खुद शायद ही कभी जबरन वसूली के कॉल करता था। रोहित वर्मा के नाम से जबरन वसूली के कॉल करना पूरी तरह से रवि पुजारी का काम था। बैंकॉक से मुंबई को एक जबरन वसूली का कॉल आया, जिसे मुंबई क्राइम ब्रांच ने इंटरसेप्ट कर लिया और इस कॉल को रिकॉर्ड कर लिया गया।
यह कॉल रोहित वर्मा ने खुद की थी। उन्होंने मुंबई के एक व्यवसायी को फोन किया, जिनका नाम केवल था। रोहित वर्मा की बात सुनने के बाद केवल ने जवाब दिया।
सेठ, अगर मैं कुछ कहूँ तो कृपया इसे गलत न समझें। मैंने कल आपसे लगभग एक घंटे बात की थी, और आपकी आवाज़ रोहित वर्मा से मेरी बातचीत के दौरान सुनाई दी आवाज़ से मेल नहीं खाती। आप रोहित वर्मा नहीं हैं, सेठ।
यह सुनकर रोहित वर्मा ने जवाब दिया, “मैं ही रोहित वर्मा हूँ। कल आपने जिससे बात की थी, वह मेरा ही आदमी था। मैं ही रोहित वर्मा हूँ।”
हालांकि, दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति यह मानने को तैयार नहीं था कि फोन करने वाला वास्तव में रोहित वर्मा ही था।
इसके बाद रोहित वर्मा कहते हैं, “आप किसी से भी उस नंबर के बारे में पूछ सकते हैं जिससे यह कॉल की गई थी, और वे सभी इस बात की पुष्टि करेंगे कि यह नंबर रोहित वर्मा का है। यहां तक कि अगर आप पुलिस विभाग से भी पूछताछ करेंगे, तो वे भी आपको यही बताएंगे कि यह नंबर मेरा ही है।”
फिर भी, दूसरी तरफ से बात करने वाला व्यक्ति अपने विश्वास पर अडिग है। वह कहता है, "सेठ, कृपया मेरी बात का गलत मतलब न निकालें, लेकिन लगता है कुछ गलतफहमी हो गई है। आपकी आवाज़ रोहित साहब जैसी नहीं लग रही। मैंने उनसे कई बार बात की है, और आपकी आवाज़ उनसे मिलती-जुलती नहीं है। अगर आपको बुरा लगे तो मुझे खेद है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप श्री रोहित साहब हैं, सेठ।"

यह सब सुनकर रोहित वर्मा कहते हैं, “ठीक है, मैं समझ गया। मैं उस व्यक्ति से कहूंगा जिसने कल आपको फोन किया था कि वह आपको फोन करे।”
कुछ देर बाद, केवल को एक कॉल आता है, और इस बार कॉल करने वाला रवि पुजारी है, जो पहले रोहित वर्मा बनकर बात कर रहा था। रवि कहता है, “मैं यहाँ नहीं था। मैं नीचे था।”
केवल ने जवाब देते हुए कहा, “रोहित भाई, जिनसे मैंने अभी बात की, मैंने उन्हें साफ-साफ बता दिया था कि मैं केवल हूं। रोहित भाई काफी परेशान हो रहे थे। उन्होंने कहा कि वह रोहित हैं, और जिनसे मैंने कल बात की थी, वह उनके लिए काम करने वाला उनका आदमी था।”
इस पर रवि पुजारी ने जवाब देते हुए कहा, "कोई बात नहीं, अब बताओ तुमने क्या फैसला किया है?"
केवल का जवाब था, "मुझे 48 घंटे दीजिए, मैं कुछ करूंगा।" और रोहित भाई, आपको खुद फोन उठाना चाहिए। पहले फोन उठाने वाला व्यक्ति और भी ज़्यादा परेशान हो रहा था और ज़ोर देकर कह रहा था, "मैं रोहित हूँ!"
इसके जवाब में रवि पुजारी कहते हैं, “चाय से ज्यादा केतली गरम, केवल। अगर तुम कल फोन करो, तो बस कह देना कि तुम केवल हो, मैं फोन उठा लूंगा।” (यह पूरी कॉल रिकॉर्डिंग 7 मिनट लंबी है, और मैंने इसे “दास्तान कहानी अनसुनी” सीजन 3 में चलाया है। यह फिलहाल यूट्यूब पर उपलब्ध है, और आप सभी इसे सुन सकते हैं।)
रोहित वर्मा बैंकॉक में माइकल डिसूजा बनकर आलीशान जिंदगी जी रहा था। वह हर रात पार्टी करता, बढ़िया रेस्टोरेंट में खाना खाता और शहर घूमता था। रोहित वर्मा के साथ-साथ रवि पुजारी और गुरु सतम भी बैंकॉक में ऐशो-आराम की जिंदगी जी रहे थे।
जून के मध्य या जुलाई 1999 की शुरुआत में, छोटा राजन ऑस्ट्रेलिया से बैंकॉक आ गया और उसी फ्लैट में रहने लगा जहाँ रोहित वर्मा उर्फ माइकल डिसूजा रह रहा था। छोटा राजन के ऑस्ट्रेलिया से बैंकॉक आने का कारण एक

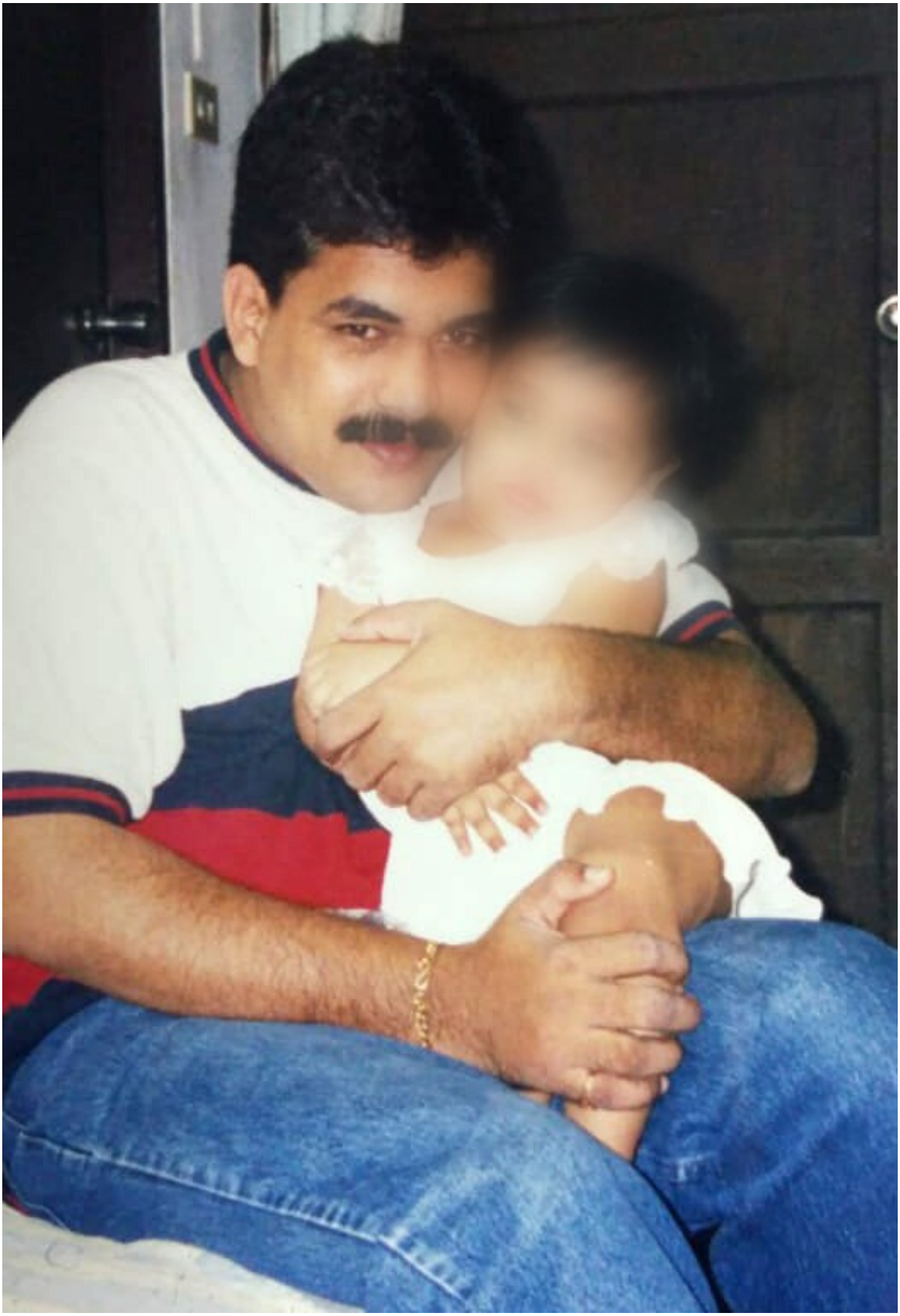

[illegible] 1999 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

पहुंचे और कुछ ही महीनों में उन्होंने एक स्थानीय साझेदार ढूंढकर एक नहीं बल्कि दो कानूनी कारोबार शुरू कर दिए। पूरा 1999 बीत जाने के बावजूद उन्हें स्थायी निवास परमिट नहीं मिला। वीजा हासिल करने के लिए रोहित वर्मा, गुरु सतम, रवि पुजारी और छोटा राजन को हर महीने कुछ घंटों के लिए थाईलैंड से दूसरे देशों की सीमा पार करनी पड़ती थी और वीजा प्राप्त करने की यह प्रक्रिया इसी तरह चलती रही।
13 जनवरी 2000 को छोटा राजन का जन्मदिन था और उसी रात एक 5 सितारा होटल में भव्य पार्टी का आयोजन किया गया। इस जन्मदिन की पार्टी में कई लोग शामिल हुए। रोहित वर्मा की स्थानीय साथी टीरा पोन भी पार्टी में मौजूद थीं। छोटा राजन ने अपना जन्मदिन का केक काटा और शैम्पेन खोली। छोटा राजन की जन्मदिन की पार्टी में कई मेहमान शामिल हुए। छोटा राजन की पत्नी सुजाता भी पार्टी में आईं। उन्होंने मैरून रंग की साड़ी पहनी थी और खास मेहमानों का ख्याल रखा। मलेशिया से आए अशोक शेट्टी भी पार्टी में शामिल हुए। उन्होंने सफेद कमीज और काली पैंट पहनी थी। छोटा राजन के गिरोह में वे अपने लंबे बालों के लिए जाने जाते थे। 13 जनवरी 2000 की जन्मदिन की पार्टी में खूब शराब पी गई और सभी ने खूब आनंद उठाया। इस जन्मदिन की पार्टी के बारे में गिरोह के सदस्यों के बीच कई दिनों तक चर्चा चलती रही।
25 जनवरी को रवि पुजारी और गुरु सतम ने रोहित वर्मा से पैसे मांगे, लेकिन आम मुद्रा में नहीं, बल्कि डॉलर में, खास तौर पर एक हजार डॉलर। जब रोहित वर्मा ने कारण पूछा, तो रवि पुजारी ने बताया कि वे पार्टी करना चाहते हैं, कुछ ड्रिंक्स का आनंद लेना चाहते हैं क्योंकि कल रोहित का जन्मदिन है, और उन्होंने आज से ही जश्न शुरू करके कल तक जारी रखने की योजना बनाई है। एक हजार डॉलर की यह मांग सुनकर रोहित वर्मा चिढ़ गए और रवि पुजारी और गुरु सतम से कहा कि वे लगभग हर दिन अलग-अलग बहाने बनाकर पार्टी कर रहे हैं और ड्रिंक्स पर पैसे खर्च कर रहे हैं। उन्होंने पार्टियों के लिए बार-बार पैसे मांगने पर उन्हें डांटा। रोहित वर्मा ने कहा कि उनके पास देने के लिए अतिरिक्त पैसे नहीं हैं, खासकर उनकी ड्रिंक्स पार्टियों के लिए। उन्होंने बताया कि वे पहले ही उनके काफी पैसे खर्च कर चुके हैं। रोहित वर्मा की झुंझलाहट सुनने के बावजूद, रवि पुजारी और गुरु सतम पैसे पर अड़े रहे और तर्क दिया कि चूंकि कंपनी में उनकी भी हिस्सेदारी है, इसलिए पार्टियों और ड्रिंक्स दोनों के लिए पैसे पाने का उनका हक है। इस खींचतान से रोहित

वर्मा चिढ़ गए और उन्होंने अपनी पहनी हुई सोने की चेन उतारकर रवि पुजारी और गुरु सतम को दे दी। उन्होंने सुझाव दिया कि चेन बेचकर उससे मिलने वाले पैसे से वे शराब पी सकते हैं और पार्टी कर सकते हैं। रवि पुजारी और गुरु सतम रोहित वर्मा के फ्लैट से बिना पैसे या सोने की चेन लिए ही चले गए।
26 जनवरी 2000 को रोहित वर्मा का जन्मदिन था, लेकिन 25 जनवरी की रात को उनका रवि पुजारी और गुरु स्टैम से मतभेद हो गया, जिससे रोहित वर्मा नाराज हो गए। परिणामस्वरूप, 26 जनवरी को होने वाली जन्मदिन की पार्टी रद्द कर दी गई।
हालांकि, 26 जनवरी की सुबह, रवि पुजारी और गुरु सतम सुलह करने के लिए रोहित वर्मा के फ्लैट पर केक लेकर आए। गुरु सतम ने खुद रोहित वर्मा को जन्मदिन का केक खिलाया और छोटा राजन भी इस छोटे से जन्मदिन समारोह में शामिल हुआ। रोहित वर्मा का गुस्सा शांत हो गया और सब कुछ पहले जैसा हो गया।
1,000 डॉलर और सोने की चेन का यह मामला किसी के ध्यान में नहीं आया, लेकिन जब अशोक शेट्टी को इस घटना के बारे में पता चला, तो उन्होंने रवि पुजारी और गुरु सतम से मुलाकात की। अशोक शेट्टी ने बातचीत की शुरुआत इस तरह की कि वे रवि पुजारी और गुरु सतम के प्रति सहानुभूति जताते नज़र आए। अशोक शेट्टी ने रवि से कहा, “आपने कंपनी को अपना सब कुछ समर्पित कर दिया है, लेकिन बदले में आपको क्या मिल रहा है? आप अपनी निजी ज़रूरतों के लिए पैसे मांगते रहते हैं। आप रोहित के लिए एक टेलीफोन डायरेक्टरी से ज़्यादा कुछ नहीं हैं। आप रोहित के नाम पर कॉल करते हैं, लेकिन इससे आपको क्या मिलता है? ज़रा सोचिए, बड़ा सोचिए और आगे बढ़िए।”
अशोक शेट्टी के इस कथन का रवि पुजारी पर गहरा प्रभाव पड़ा और उस दिन से रवि पुजारी के व्यक्तित्व में परिवर्तन आने लगा। रवि पुजारी और गुरु सतम अशोक शेट्टी के और करीब आ गए। अक्सर देखा जाता था कि जब रवि पुजारी और गुरु सतम को अपने वीजा का नवीनीकरण कराना होता था, तो वे कंबोडिया के पोई पेट या थाईलैंड के पड़ोसी देशों लाओस जैसी जगहों पर जाते थे। वे वीजा नवीनीकरण के लिए हांगकांग भी जाते थे, लेकिन केवल तभी जब कोई निर्धारित बैठक होती थी। अशोक शेट्टी के करीब आने के बाद, रवि पुजारी और गुरु सतम वीजा नवीनीकरण के लिए मलेशिया जाने लगे और उसके घर पर रहने लगे। रवि पुजारी अपना खुद का गिरोह बनाने के बारे में सोचने लगा। गिरोह चलाने के लिए रवि पुजारी को पैसों की जरूरत थी, और वह अपनी शर्तों पर पैसे कमाने के लिए दृढ़ संकल्पित

था। अशोक शेट्टी ने रवि पुजारी की इस सोच का फायदा उठाना शुरू कर दिया। उसने अपने खर्चों के लिए बैंकॉक में एक फ्लैट किराए पर लिया था। बैंकॉक में फ्लैट होने के बावजूद, अशोक शेट्टी कभी रोहित वर्मा के फ्लैट पर नहीं गया। अशोक शेट्टी को बैंकॉक में रोहित वर्मा के फ्लैट के स्थान की जानकारी नहीं थी, जहाँ छोटा राजन भी रहता था।
छोटा राजन का जन्मदिन - अशोक शेट्टी ने काली पैंट और सफेद शर्ट पहनी है, साथ में रोहित वर्मा भी हैं। जब भी अशोक शेट्टी को छोटा राजन से मिलना होता था, छोटा राजन उनसे बैंकॉक या पटाया के किसी 5 सितारा होटल में मिलते थे, जहाँ छोटा राजन अक्सर जाया करते थे।
मालिश।
रवि पुजारी और गुरु सतम के करीब आने के बाद अशोक शेट्टी को इस स्थिति का फायदा मिलने लगा। धीरे-धीरे अशोक शेट्टी, रवि पुजारी और गुरु सतम के साथ रोहित वर्मा के फ्लैट पर जाने लगा। असल में, रवि पुजारी और गुरु सतम ही थे जो अशोक शेट्टी को पहली बार रोहित वर्मा के फ्लैट पर लाए थे। तब से अशोक शेट्टी, रवि पुजारी और गुरु सतम के साथ रोहित वर्मा के फ्लैट पर होने वाली पार्टियों में जाने लगा।
अप्रैल 2000 में, अशोक शेट्टी पहली बार बैंकॉक में रोहित वर्मा के फ्लैट पर गए, और रवि पुजारी उन्हें अपने साथ ले गए। रवि पुजारी जब मलेशिया जाते थे, तो वे अशोक शेट्टी के साथ ही रुकते थे। इसी दौरान, अशोक शेट्टी ने रवि पुजारी को अच्छी कमाई का सुझाव दिया। अशोक शेट्टी द्वारा फैलाई गई अफवाहों से रवि पुजारी बहुत प्रभावित हुए थे और अब वे सिर्फ एक सहायक और टेलीफोन ऑपरेटर से बढ़कर कुछ बनना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपना खुद का गिरोह बनाने का फैसला किया।
गुरु सतम ने भी इस प्रयास में रवि पुजारी का समर्थन किया। रवि पुजारी ने अशोक शेट्टी से पूछा कि वे अतिरिक्त धन कैसे कमा सकते हैं। अशोक शेट्टी ने जवाब दिया, "रुको..." अशोक शेट्टी ने अपने मोबाइल से छोटा शकील को फोन किया और उसे रवि पुजारी से बात करवाई। छोटा शकील ने रवि पुजारी को बताया कि उसे अशोक शेट्टी को अपने साथ उस जगह ले जाना चाहिए जहाँ छोटा राजन रहता है और एक बड़े इनाम का वादा किया।
शुरुआत में, रवि पुजारी को मलेशिया में छोटा शकील द्वारा हवाला के माध्यम से भेजी गई धनराशि प्राप्त हुई। इस मामले में गुरु सतम ने रवि पुजारी का

पूरा समर्थन किया, जिसके परिणामस्वरूप रवि पुजारी और गुरु सतम अशोक शेट्टी को रोहित वर्मा के फ्लैट पर ले गए, जहाँ

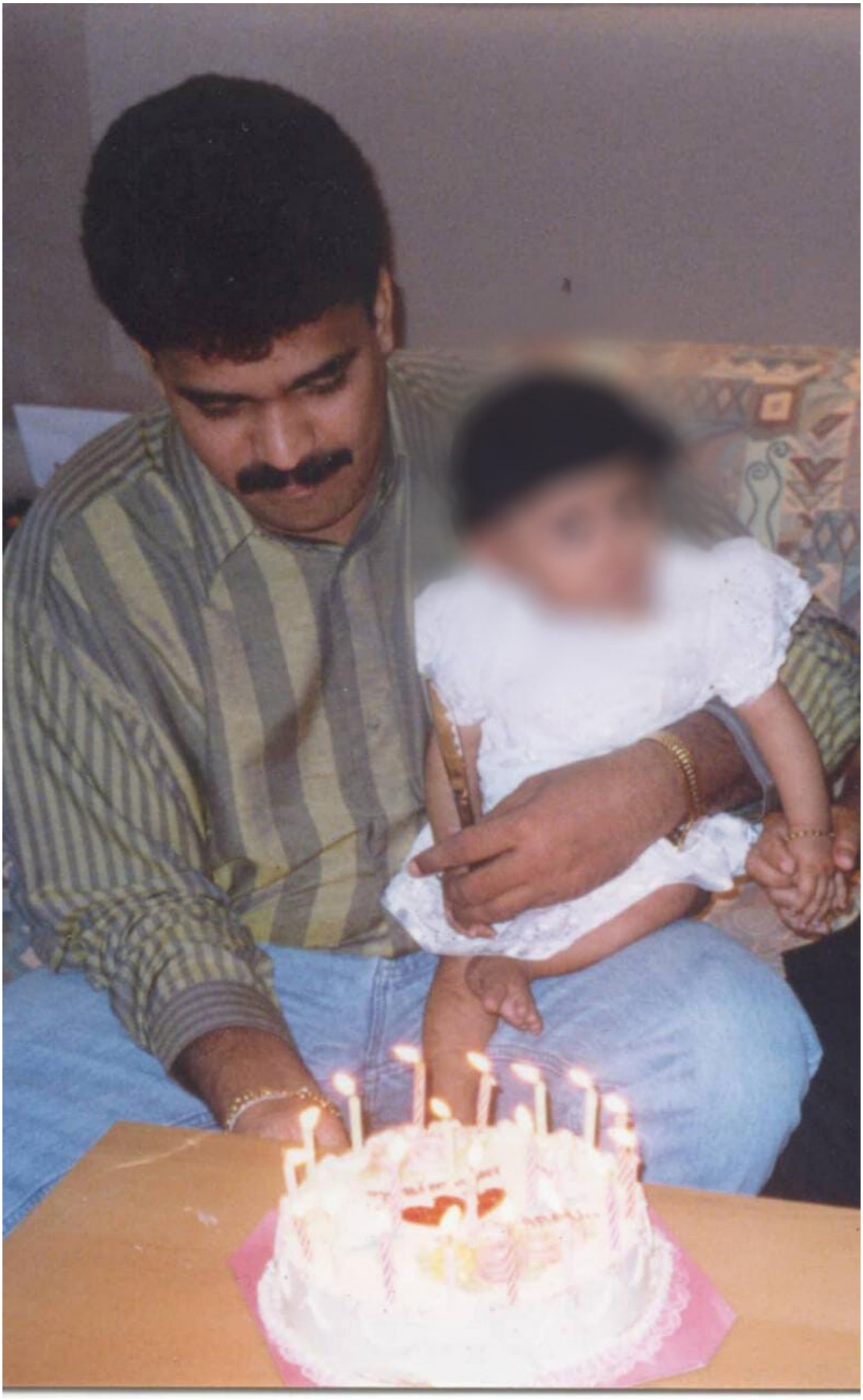

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□

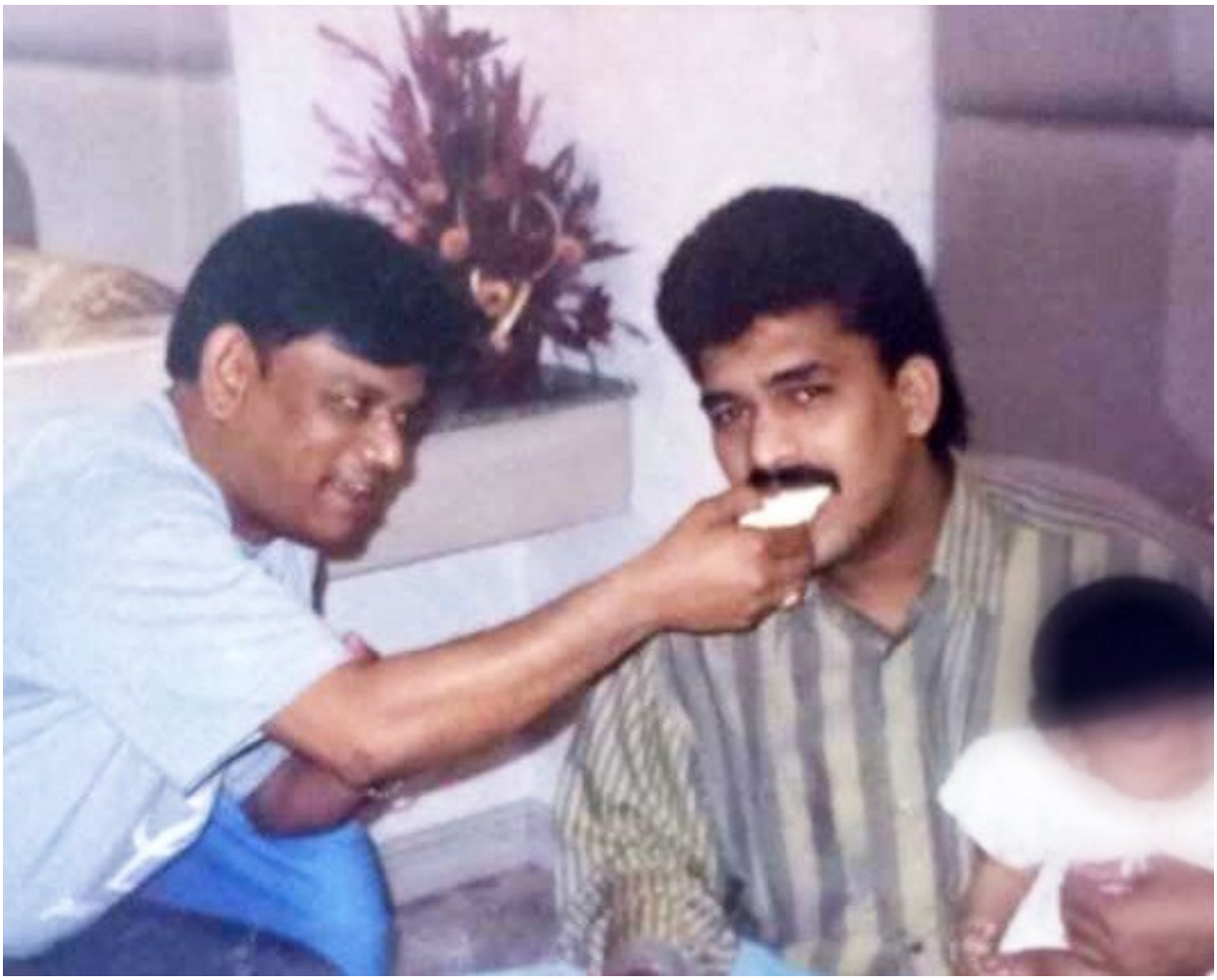

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

रोहित वर्मा के जन्मदिन पर रवि पुआजरी ने कहा कि छोटा राजन भी जीवित है।

मई-जून 2000 में संतोष शेट्टी और भरत नेपाली मलेशिया से बैंकॉक चले गए और बैंकॉक में एक अलग फ्लैट में रहने लगे। अब संतोष शेट्टी और भरत नेपाली ने बैंकॉक के माध्यम से छोटा राजन के अंतरराष्ट्रीय लेन-देन पर नज़र रखना शुरू कर दिया।
छोटा राजन और रोहित वर्मा एक अनोखी योजना पर मिलकर काम कर रहे थे। रोहित वर्मा और छोटा राजन एक नया अड्डा स्थापित करने की सोच रहे थे। बैंकॉक में उन्होंने काफी सफलता हासिल कर ली थी और अब उनका लक्ष्य अपने गिरोह का विस्तार बड़े पैमाने पर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करना था। इसके लिए रोहित वर्मा और छोटा राजन ने अफ्रीका को चुना।
अफ्रीका में कई ऐसे देश थे जहां रोहित वर्मा अपने गिरोह का अड्डा स्थापित कर सकता था और कानूनी तौर पर अपना कारोबार चला सकता था। छोटा राजन और रोहित वर्मा ने अफ्रीका के एक देश में खनन में निवेश करने पर विचार करना शुरू किया। खनन एक बेहद लाभदायक उद्योग था, और अवैध खनन तो और भी अधिक लाभदायक था। अफ्रीका माफिया सरगनाओं के लिए धन कमाने और उसे छिपाने का एक सुरक्षित ठिकाना था।
छोटा राजन और रोहित वर्मा ने इस उद्देश्य से कुछ अफ्रीकी माफिया समूहों के साथ बातचीत शुरू की थी। हालांकि, उन्होंने अफ्रीका में नया अड्डा स्थापित करने की योजना को गुप्त रखा और गिरोह के किसी भी सदस्य को इसकी भनक तक नहीं लगी। सभी का मानना था कि बैंकॉक छोटा राजन के गिरोह का स्थायी अड्डा बन गया है। रोहित वर्मा बैंकॉक से मुंबई में गतिविधियों की देखरेख कर रहे थे, जबकि संतोष शेट्टी और भरत नेपाली बैंकॉक से ही अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों को संभाल रहे थे।
मई-जून 2000 के दौरान, छोटा शकील ने बैंकॉक में एक दल भेजा। इस दल का काम छोटा राजन और रोहित वर्मा पर नज़र रखना था। छोटा शकील के दल ने अरी कोर्ट बिल्डिंग में रोहित वर्मा के फ्लैट के पास एक अपार्टमेंट किराए पर लिया। रोहित वर्मा का फ्लैट अरी कोर्ट से महज़ एक मिनट की दूरी पर था। छोटा शकील के आदमियों ने छोटा राजन और रोहित वर्मा की गतिविधियों पर नज़र रखना शुरू कर दिया। उन्होंने उनके आने-जाने पर भी कड़ी निगरानी रखी। एकत्रित की गई सभी जानकारी छोटा शकील को भेजी गई।
छोटा शकील द्वारा बैंकॉक भेजे गए दल का प्रारंभिक कार्य केवल रोहित वर्मा और छोटा राजन पर नज़र रखना था, यह देखना कि वे कहाँ जाते हैं, किससे मिलते

हैं और क्या करते हैं। छोटा शकील छोटा राजन को निशाना बनाकर पूरे गिरोह को खत्म करना चाहता था, यहाँ तक कि वह छोटा राजन के अंतरराष्ट्रीय कारोबारों को भी बाधित करना चाहता था। इसलिए, छोटा शकील द्वारा छोटा राजन और रोहित वर्मा के पीछे लगाए गए दल को बैंकॉक में उनसे मिलने वाले सभी लोगों की जानकारी एकत्र करके छोटा शकील को देनी थी।
रवि पुजारी और गुरु सतम ने रोहित वर्मा और छोटा राजन के भरोसे को धोखा देते हुए फ्लैट का पता अशोक शेट्टी को बता दिया। अशोक शेट्टी ने यह जानकारी छोटा शकील को दे दी। रवि पुजारी और गुरु सतम दोनों ने अशोक शेट्टी के माध्यम से छोटा शकील से संपर्क स्थापित किया। रवि पुजारी और गुरु सतम रोहित वर्मा और छोटा राजन से जुड़ी कोई भी नई जानकारी अशोक शेट्टी को देते थे। अशोक शेट्टी या तो बैंकॉक या मलेशिया में रहता था। अब, अशोक शेट्टी को अक्सर बैंकॉक में रोहित वर्मा के फ्लैट पर देखा जाता था।
जब रवि पुजारी और गुरु सतम वीजा नवीनीकरण के लिए मलेशिया गए, तो वे अशोक शेट्टी के घर से छोटा शकील से संपर्क करते थे। रोहित वर्मा के फ्लैट का पता बताने के बदले में अशोक शेट्टी, रवि पुजारी और गुरु सतम को मोटी रकम मिली थी। एक हजार डॉलर न मिलने पर, रवि पुजारी और गुरु सतम ने अशोक शेट्टी के साथ मिलकर रोहित वर्मा और छोटा राजन को छोटा शकील को 5 करोड़ रुपये में बेच दिया। छोटा शकील के आदमियों ने छोटा राजन और रोहित वर्मा पर कड़ी नजर रखी, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके बारे में हर जानकारी छोटा शकील तक पहुंचे। यह निगरानी अगस्त 1999 तक जारी रही। अगस्त में, छोटा शकील ने निशानेबाजों की एक और टीम भेजी। छोटा शकील ने निगरानी के लिए एक अलग टीम और हमले या हत्याएं करने के लिए एक अलग टीम बनाई थी। उसने इस टीम को स्पष्ट निर्देश दिए थे कि जब भी छोटा राजन और रोहित वर्मा अपने घरों के बाहर मिलें, तो उन्हें एक साथ दोनों को खत्म कर देना चाहिए। इस निर्देश के पीछे कारण यह था कि यदि उनमें से कोई भी बच जाता, तो गिरोह का पुनर्गठन हो सकता था। रोहित वर्मा मुंबई का पूरा कामकाज संभाल रहा था, जबकि छोटा राजन बैंकॉक से मुंबई और अंतरराष्ट्रीय सौदों दोनों की देखरेख कर रहा था। इसलिए, छोटा शकील ने अपने शार्पशूटरों के माध्यम से दोनों को एक साथ खत्म करने का आदेश दिया।
छोटा राजन और रोहित वर्मा ने अफ्रीका में एक नया अड्डा स्थापित करने का मन बना लिया था, और इसी उद्देश्य से 20 सितंबर को उन्होंने दक्षिण अफ्रीका

जाने की योजना बनाई और इसके लिए फ्लाइट टिकट भी बुक करा लिए। इस बीच, छोटा शकील की टीम उन्हें एक साथ पकड़ने के मौके की तलाश में थी, लेकिन जब से छोटा शकील की निशानेबाजों की टीम बैंकॉक पहुंची थी, संयोगवश छोटा राजन और रोहित वर्मा कभी भी अपने फ्लैट से एक साथ बाहर नहीं निकले। छोटा राजन और रोहित वर्मा अक्सर अलग-अलग जगहों पर जाते थे। छोटा राजन बैठकों के अलावा शायद ही कभी रोहित वर्मा के फ्लैट से बाहर निकलते थे, और इस दौरान ऐसी कोई महत्वपूर्ण बैठक नहीं हुई जिसके लिए उन्हें बाहर जाना पड़े। मलेशिया से आए अशोक शेट्टी स्थिति की जानकारी जुटाते रहे। अशोक शेट्टी ने रवि पुजारी और गुरु सतम से मुलाकात की और जानकारी इकट्ठा की।
3 सितंबर 2000 को रोहित वर्मा की बेटी का जन्मदिन था और इस दिन रोहित वर्मा के घर पर केक काटा गया। रोहित वर्मा के घर आने वाला हर व्यक्ति उनकी बेटी के जन्मदिन के लिए केक लेकर आ रहा था। अशोक शेट्टी, गुरु सतम, रवि पुजारी,

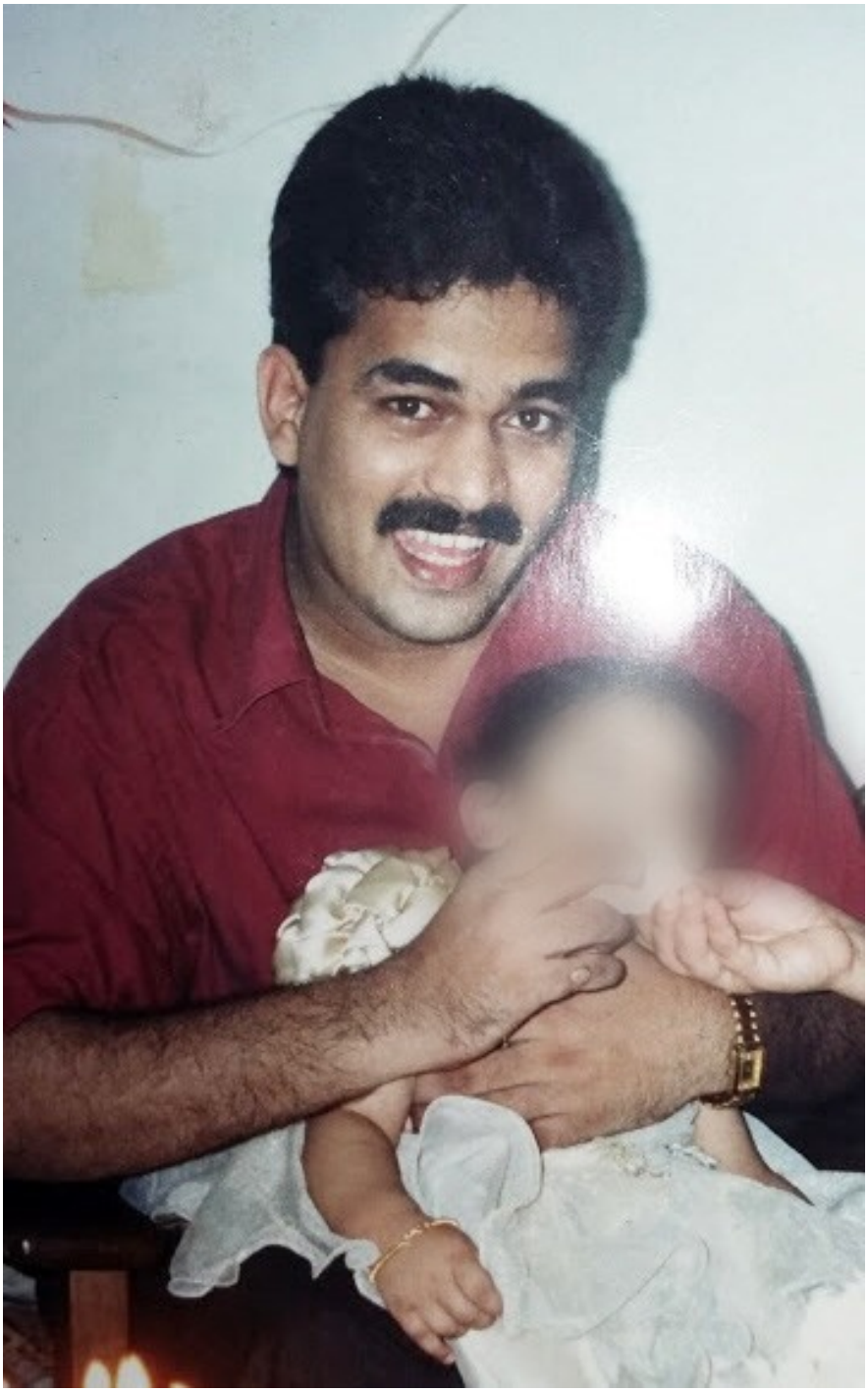

रोहित वर्मा की बेटी का जन्मदिन

रोहित वर्मा डौथर के जन्मदिन पर रवि पुजारी

रवि पुआजरी और रोहित वर्मा जन्मदिन मना रहे हैं

रोहित वर्मा की बेटी के जन्मदिन पर गुरु सतम।

छोटा राजन रोहित वर्मा की बेटी के जन्मदिन पर रोहित वर्मा के आभूषण स्टोर के कर्मचारियों और रोहित वर्मा के स्थानीय सहयोगियों के साथ उनके फ्लैट पर केक लेकर आ रहे थे। उस दिन उनके घर पर एक पार्टी थी।
रोहित वर्मा की बेटी की जन्मदिन पार्टी के कुछ दिनों बाद, रवि पुजारी और गुरु सतम को रोहित वर्मा और छोटा राजन के अफ्रीका जाने की योजना के बारे में पता चला। रवि पुजारी और गुरु सतम ने पूछा कि उन्हें साथ क्यों नहीं ले

जाया जा रहा है। छोटा राजन ने बताया कि वे अफ्रीका में गिरोह के लिए एक नया अड्डा स्थापित करने की योजना बना रहे हैं और वहाँ अपना कारोबार स्थापित करने के लिए रुकेंगे, जिसके लिए बैठकों की आवश्यकता होगी। रवि पुजारी ने जवाब दिया कि चूंकि गिरोह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार कर रहा है और अफ्रीका उनका नया मुख्यालय होगा, इसलिए इस फैसले का जश्न मनाने के लिए एक पार्टी होनी चाहिए। उसी रात, एक और केक आया और रोहित वर्मा के बैंकॉक स्थित फ्लैट में पार्टी जारी रही।
अशोक शेट्टी बैंकॉक में थे, और रवि पुजारी और गुरु सतम ने उनसे मुलाकात कर छोटा राजन और रोहित वर्मा की अफ्रीका जाने की योजना पर चर्चा की। उन्होंने अशोक शेट्टी को बताया कि वे दोनों अफ्रीका में अपना अड्डा स्थापित करने पर विचार कर रहे हैं। अशोक शेट्टी ने यह जानकारी फोन पर छोटा शकील को दी। फोन बैंकॉक से किया गया था, और अशोक शेट्टी ने छोटा शकील से संपर्क करने के लिए रवि पुजारी के नंबर का इस्तेमाल किया।
अशोक शेट्टी ने रोहित वर्मा के घर जाकर छोटा राजन और रोहित वर्मा को अफ्रीका में नया गिरोह अड्डा स्थापित करने की योजना के लिए बधाई दी। वह जश्न मनाने के लिए केक भी साथ लाए थे। छोटा राजन और रोहित वर्मा के अफ्रीका जाने की खबर गिरोह में अब गुप्त नहीं रही। अफ्रीका में अपने विस्तार और प्रभुत्व की उम्मीद में गिरोह में खुशी की लहर दौड़ गई। इसी वजह से रोहित वर्मा के फ्लैट पर रात में पार्टियां होने लगीं।
छोटा शकील बैंकॉक में छोटा राजन और रोहित वर्मा को खत्म करने का मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि छोटा राजन का गिरोह और मजबूत हो या उसके चंगुल से भाग निकले। इसलिए उसने अपने निशानेबाजों को फ्लैट में घुसकर उन दोनों को मार गिराने का आदेश दिया। उसने इस ऑपरेशन की तारीख भी तय कर ली और अशोक शेट्टी और उसके निशानेबाजों को बता दिया कि छोटा राजन और रोहित वर्मा के घर पर कब हमला करना है।
14-15 सितंबर, 2000 की रात को, रवि पुजारी और गुरु सतम ने बैंकॉक छोड़ दिया, यह कहते हुए कि उन्हें अपने वीजा का नवीनीकरण कराना होगा और वे एक या दो दिन में कंबोडिया से लौट आएंगे।
15 सितंबर, 2000 को शाम लगभग 6 बजे, अशोक शेट्टी रोहित वर्मा के फ्लैट पर पहुंचे और छोटा राजन के साथ करीब दो घंटे बिताए। रात 8 बजे, जब अशोक शेट्टी जाने वाले थे, रोहित वर्मा ने उनसे जाने से पहले खाना खाने को कहा और बताया

कि उस रात खाने में छोटा राजन की पसंदीदा मछली बनी है। अशोक शेट्टी ने जवाब दिया कि वह कुछ बेहतर पीने के लिए बाहर जाएंगे। इतना कहकर अशोक शेट्टी रोहित वर्मा के फ्लैट से चले गए।
उस शाम अशोक शेट्टी यह देखने आया था कि छोटा राजन और रोहित वर्मा घर पर हैं या बाहर जाने की योजना बना रहे हैं। उसने छोटा शकील के आदमियों और खुद छोटा शकील को बताया कि छोटा राजन और रोहित वर्मा घर पर ही हैं और रात के खाने की तैयारी कर रहे हैं। छोटा शकील ने अशोक शेट्टी को निशानेबाजों के साथ फ्लैट की घंटी बजाने का निर्देश दिया।
15 सितंबर, 2000 की रात 9 बजे, सावन कोर्ट में एक लिमोसिन कार आकर रुकी। उस कार में छोटा शकील से जुड़े शूटर थे, जिन्होंने फॉर्मल सूट और पैंट पहन रखी थी। शूटरों की टीम का नेतृत्व मुन्ना झिंगड़ा और राशिद मालाबारी कर रहे थे। सुरक्षा गार्ड ने कार में बैठे लोगों को रोकने की कोशिश की, लेकिन दो शूटरों ने गार्ड को अपने कब्जे में ले लिया। अशोक शेट्टी भी उनके साथ था। केक लिए हुए अशोक शेट्टी और शूटर रोहित वर्मा के फ्लैट के मुख्य द्वार पर पहुंचे। अशोक शेट्टी ने फ्लैट की घंटी बजाई, और घंटी की आवाज सुनकर रोहित ने कहा, "लगता है अशोक शेट्टी आ गया है।" जब घर की घंटी बजी, तो छोटा राजन फोन पर बात कर रहा था, और घंटी की आवाज सुनकर वह अपने कमरे में चला गया। रोहित वर्मा दरवाजे के पास पहुंचा और दरवाजे पर लगे आईपिस से उसने अशोक शेट्टी को केक पकड़े हुए देखा। रोहित ने दरवाजा खोला, और जैसे ही रोहित मुड़ा, शूटरों ने गोलियां चलाना शुरू कर दिया। छोटा राजन ने गोलियों की आवाज सुनी और अपने कमरे के दरवाजे से बाहर झाँका। हमलावर उसे दिखाई दे रहे थे, इसलिए उसने अपनी तरफ से दरवाजा बंद करने की कोशिश की। लेकिन हमलावरों ने उसे जरा भी समय नहीं दिया और उस पर लगातार गोलियां चलाते रहे। छोटा राजन ने अपने कमरे की खिड़की से कूदकर अपनी जान बचाने की कोशिश की, लेकिन हमलावर अंदर घुस आए और उस पर गोलियां चलाते रहे। गोलियां छोटा राजन को लगीं और उसके बाद हमलावर फ्लैट से भाग गए।
कुछ देर बाद पुलिस आती है और छोटा राजन को अस्पताल में भर्ती कराती है। अस्पताल जाते समय छोटा राजन संतोष शेट्टी को फोन करके अपने हमले की जानकारी देता है। उसे ठीक से पता नहीं होता कि पुलिस उसे कहाँ ले जा रही है और अगर उसे अस्पताल भी ले जा रही है तो उसे इसकी जानकारी नहीं होती। कुछ देर बाद संतोष शेट्टी को मुंबई से फोन आता है। फोन पर छोटा राजन की पत्नी

सुजाता थी। सुजाता ने संतोष शेट्टी को उस अस्पताल के बारे में बताया जहाँ छोटा राजन को भर्ती कराया गया था। संतोष शेट्टी बिना देरी किए भरत नेपाली के साथ अस्पताल के लिए रवाना हो जाते हैं। अगले दिन रवि पुजारी और गुरु सतम की तलाश शुरू होती है, लेकिन उनका कोई पता नहीं चलता। दोनों के मोबाइल फोन बंद थे। इतने बड़े हमले के बाद यह संदेह पैदा होता है कि छोटा राजन के साथ मौजूद लोगों ने फोन क्यों नहीं किया या अस्पताल क्यों नहीं गए। अशोक शेट्टी अपने बैंकॉक वाले फ्लैट में नहीं मिले और उनका मोबाइल फोन भी बंद था।
सैमी, जो हांगकांग में रहते हुए छोटा राजन के गिरोह को फोन नंबर मुहैया कराता था, को छोटा राजन ने रवि पुजारी और गुरु सतम के कॉल रिकॉर्ड हासिल करने के लिए कहा। उन कॉल रिकॉर्ड्स से छोटा राजन को पता चला कि रवि पुजारी और गुरु सतम, छोटा शकील के संपर्क में थे।
21 सितंबर 2000 को दोपहर 3:05 बजे, बैंगलोर से एक विमान मुंबई हवाई अड्डे पर उतरा। इसी विमान से रोहित वर्मा का शव मुंबई पहुँचा। बैंकॉक से मुंबई के लिए कोई सीधी उड़ान न होने के कारण, रोहित वर्मा का शव बैंगलोर होते हुए मुंबई पहुँचा।
बाबू उर्फ धर्मेंद्र पांडे उर्फ रोहित वर्मा उर्फ संदेश शर्मा उर्फ माइकल डिसूजा का अंतिम संस्कार मुंबई में संपन्न हुआ।
बैंकॉक के बाद अशोक शेट्टी कहीं नजर नहीं आए और किसी को नहीं पता कि वह कहां हैं या क्या कर रहे हैं।
2000 में बैंकॉक छोड़ने के बाद, रवि पुजारी और गुरु सतम ने मिलकर एक नया गिरोह बनाया। हालाँकि, यह साझेदारी ज़्यादा समय तक नहीं चली। 2005 में, गुरु सतम और रवि पुजारी अलग हो गए, और दोनों ने अपने-अपने गिरोह चलाने शुरू कर दिए।
रोहित वर्मा ने रवि पुजारी को अपना भाई और रवि पुजारी की पत्नी को अपनी भाभी बना लिया था ताकि लड़की के परिवार से शादी का प्रस्ताव रखना आसान हो जाए। रोहित वर्मा ने कभी सोचा भी नहीं था कि जिस व्यक्ति को उसने अपना भाई बनाया था, वही एक दिन उसे धोखा देकर प्रतिद्वंद्वी गिरोह को पाँच करोड़ रुपये में बेच देगा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2017 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

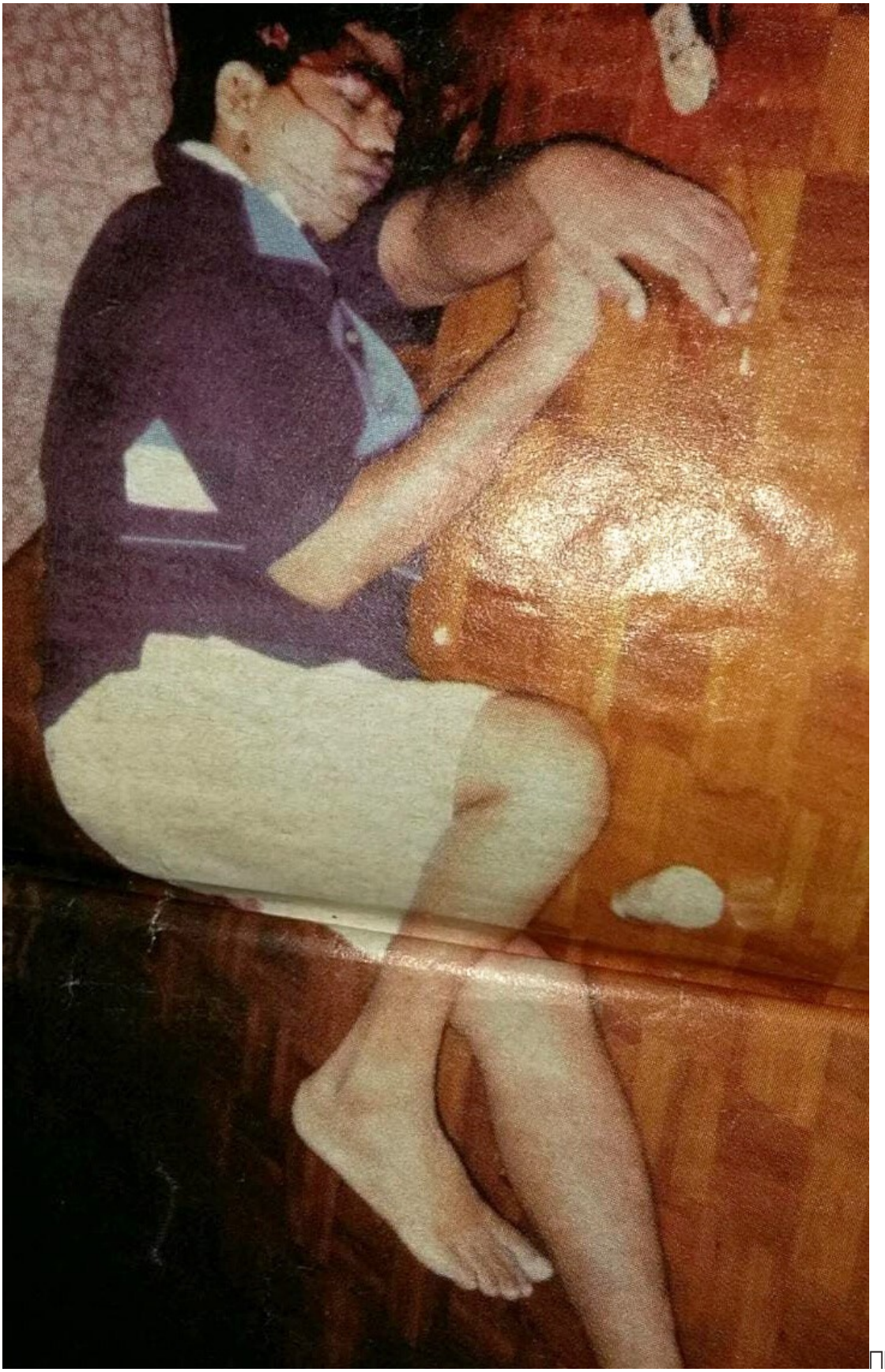

□□□□□ □□ □□

भारत गणराज्य REPUBLIC OF INDIA

प्रकार /Type	राष्ट्रीय कोड /Country Code	पासपोर्ट सं. /Passport No.
	IND	A- 6469111

उपनाम /Surname

दिया जाने वाला नाम /Given Names

RAJESH MOOR

राष्ट्रीयता /Nationality	लिंग /Sex	जन्मतिथि /Date of Birth
INDIAN	M	15-08-1958

जन्म स्थान /Place of Birth

PUNE

जारी करने का स्थान /Place of Issue

NEW DELHI

जारी करने की तिथि /Date of Issue	समाप्ति की तिथि /Date of Expiry
16-11-98	15-11-2008

REPUBLIC OF INDIA

GOVERNMENT OF INDIA

Regional Passport Office